हिंदी पाठ्यपुस्तक-6

1. वर्षा समीर

अभ्यास

उच्चारण आधारित

- **शुद्ध लिखो और बोलो–** बरसात, समीर, इठलाती, हर्ष, नाचती, लहराती।

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. कविता में धीमी और प्यारी हवा की बात की गई है।
2. तरुमाल से बरसात की आती हुई हवा खेल रही है।
3. हवा वर्षा से धुले साफ आकाश, चंद्रमा के पास से या बादलों की साँस से प्रकट होती है।
4. हवा की सहेली वर्षा की बूँदों को माना गया है।
5. इंद्रधनुष में रंग बरसात की मदमाती हवा भर देती है।

- **लिखित**

1. मदमाती हवा वर्षा-धुले आकाश से, चंद्रमा के पास से, बादलों की साँस से, ऊँचे शिखरों से, आकाश और पाताल के बीच से और वनस्पतियों (डाल-पात) के बीच से आ रही है।
2. हवा मनुष्यों और बच्चों से, आकाश-पाताल से, लताओं के जाल से, पेड़-पौधों की डालों से और ढालों (पहाड़ों की चोटियों) से खेलने की बात कही जा रही है।
3. हवा प्रकृति और मनुष्य दोनों के लिए आनंद और स्फूर्ति सरसाती है।
4. हवा की संगिनी बादल की घटाएँ (मेघ) और संगी मूसलाधार पानी और बिजली हैं।
5. हवा कभी इंद्र धनु और कभी चंद्र धनु में रंग भरती है।

- **आपकी समझ से**

सही विकल्प

1. (घ), 2. (घ), 3. (क), 4. (ख), 5. (ग)।

- **सोच-समझकर**

1. वर्षा समीर कविता में हरिवंश राय बच्चन जी ने कविता में मोर-मोरनी को हवा का साथी इसलिए कहा है क्योंकि वे हवा के झोकों के साथ झूमते, नाचते और मदमस्त होते हैं।

   इसके अलावा अन्य कारण भी हैं–

   1. उत्साह और उल्लास–वर्षा समीर की पहली हवा के साथ मोर और मोरनी का उत्साह और उल्लास चरम पर होता है। वे हवा की लहरों के साथ अपनी पंखों को फैलाकर नाचते हैं।

   2. स्वतंत्रता और प्रकृति से जुड़ाव–मोर और मोरनी का हवा के साथ जुड़ना उनकी स्वतंत्रता और प्रकृति के साथ उनके गहरे जुड़ाव को दर्शाता है। वे हवा के साथ खुद को एकाकार कर लेते हैं।

   3. हवा की लय और ताल–मोर-मोरनी का नृत्य हवा की लय और ताल के साथ चलता है, जिससे ऐसा प्रतीत होता है कि वे हवा के साथी हैं।

   इस प्रकार, यह कविता मोर-मोरनी के प्रकृति के साथ मिलन और हवा की गति के साथ उनके आनंदपूर्ण जुड़ाव को दर्शाती है।

2. हवा (वायुमंडल) पृथ्वी पर जीवन के लिए सबसे आवश्यक तत्वों में से एक है। इसकी भूमिका केवल साँस लेने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह पारिस्थितिकी तंत्र मौसम और भूवैज्ञानिक प्रक्रियाओं का आधार है।

   संसार में हवा की भूमिका का विवरण इस प्रकार है–

   1. जीवन का आधार (साँस लेना)–हवा में मौजूद ऑक्सीजन मनुष्यों, जानवरों और कई सूक्ष्मजीवों के जीवित रहने के लिए जरूरी है। यह कोशिकाओं में ऊर्जा उत्पन्न करने के लिए आवश्यक है।

   2. प्रकाश संश्लेषण–पेड़-पौधे हवा से कार्बन डाईऑक्साइड ग्रहण करते हैं और प्रकाश संश्लेषण की प्रक्रिया द्वारा अपना भोजन बनाते हैं, जिससे हमें ऑक्सीजन वापस मिलती है।

   3. तापमान का संतुलन–हवा पृथ्वी के तापमान को नियंत्रित करने में मदद करती

है। हवा के प्रवाह के कारण गर्मी का फैलाव होता है, जिससे पृथ्वी न तो अत्यधिक गर्म होती है और न ही बहुत ठंडी।

4. जल चक्र–हवा बादलों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाती है, जिससे वर्षा होती है। हवा के बिना पानी का चक्र रुक जाता है, जिससे पानी का संकट पैदा हो जाएगा।

5. परागण–हवा परागण में मदद करती है, जिससे फूल, फल और बीज बनते हैं यह प्रकृति के पारिस्थितिक तंत्र के लिए महत्वपूर्ण है।

अंततः हम यही कहेंगे कि हवा पृथ्वी पर जीवन, प्रकृति और पर्यावरण के संतुलन को बनाए रखने के लिए एक अनिवार्य तत्व है।

- **पंक्तियों पर चर्चा**

1. **भावार्थ**–कवि कहता है कि हवा केवल ठंडी ही नहीं है, बल्कि इसमें एक विशेष प्रकार की मादकता और सुगंध है। वर्षा के कारण प्रकृति जीवंत हो उठी है, जिससे हवा में फूल-पत्तियों की भीनी-भीनी सुगंध और मिठास (मधु) घुल गई है। यह हवा बहते हुए वातावरण में खुशी, आनंद और प्रेम का नशा (मदमाती) भर देती है।
2. **भावार्थ**–बरसात के मौसम में चलने वाली ठंडी और मस्त हवा, नदियों या तालाबों के पानी के साथ लुका-छिपी का खेल खेल रही है। हवा के झोंकों से पानी में लहरें उठती हैं, जिसे देखकर ऐसा लगता है कि हवा के साथ अठखेलियाँ (खेल) कर रही है।

   यह पंक्ति वर्षा के सौंदर्य, शीतलता और उमंग को दर्शाती है। यह हवा की चंचलता और जल के साथ उसके सहज संबंध को व्यक्त करती है।
3. कवि ने वर्षा समीर को एक सजीव, मस्त भरी सहेली के रूप में चित्रित किया है। पिकी (कोयल) और चातकी (चातक पक्षी) बरसात के मौसम में ही सबसे ज्यादा प्रसन्न होते हैं और बोलते हैं। कवि कहते हैं कि जैसे ही बरसाती हवा आती है, ये दोनों पक्षी (पिकी और चातकी) उसकी सहेलियों की तरह खुशी से चहकने लगते हैं और हवा के साथ-साथ प्रकृति में उमंग भर देते हैं।
4. कवि कहता है कि बरसात के दिनों में चलने वाली हवा बहुत सुहावनी और मस्ती भरी होती है। यह हवा न केवल ठंडक भरी होती है, बल्कि अपने साथ एक अनोखा उत्साह और चंचलता भी लेकर आती है, जो मन को खुश कर देती है। यह प्रेम और आनंद के संदेश जैसी प्रतीत होती है। यह पंक्ति बरसात के मौसम में चलने वाली हवा के अल्हड़, चंचल और मदमस्त रूप का वर्णन करती है।

- **रिक्त स्थान**

1. हवा   2. बल
3. तरुमाल से   4. सहेली
5. रँगती

- **प्रत्यास्मरण**

सप्रसंग व्याख्या–यह पक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक 'तरंग' के पाठ 'वर्षा समीर' से ली गई हैं। इन पंक्तियों में हरिवंश राय बच्चन ने बरसात के मौसम में चलने वाली हवा का वर्णन किया है।

भावार्थ–इन पक्तियों में कवि कहता है कि वर्षा ऋतु में चलने वाली हवा की कोयल (पिकी) और पपीहा (चातकी) सहेलियाँ हैं। मोरनी (शिखीन) और मोर (शिखी) भी इसके संगी-साथी हैं। यह वर्षा की हवा के साथ नाचते और गाते हैं, जो वातावरण में खुशियाँ और उत्साह भर देते हैं।

- **पाठ से आगे**

1. हवा (वायु) हमें जीवन में कई महत्वपूर्ण सबक सिखाती है, जो न केवल प्रकृति से जुड़े हैं, बल्कि मानवीय गुणों से भी संबंधित हैं–

   (अ) स्वतंत्रता और प्रवाह–हवा बिना किसी बंधन के स्वतंत्र रूप से बहती है, जो हमें बंधन मुक्त होकर जीने की शिक्षा देती है।

   (ब) अनुकूलनशीलता–हवा जैसे हर परिस्थिति में ढल जाती है, वैसे ही हमें भी परिस्थितियों के अनुकूल हमें भी ढलना चाहिए।

   (स) कोमलता और शक्ति का संतुलन–हवा कभी कोमल समीर (ठंडी हवा) बन कर आती है तो कभी आँधी-तूफान

बनकर; यह हमें सिखाती है कि कब शांत रहना है और कब अपनी शक्ति का प्रदर्शन करना है।

(द) गुप्त सहयोग–हवा हमें नहीं दिखाई देती, लेकिन हमारे चारों ओर मौजूद रहकर हमें जीवन (ऑक्सीजन) प्रदान करती है। यह सिखाती है कि निस्वार्थ भाव से दूसरों की मदद करनी चाहिए।

(य) निरंतरता और गतिशीलता–हवा कभी रुकती नहीं है, वह निरंतर बहती रहती है। यह हमें जीवन में लगातार आगे बढ़ते रहने की प्रेरणा देती है।

(र) परिवर्तन के लिए तैयार रहना–हवा का झोंका कब रुख बदल ले कोई नहीं जानता। यह हमें सिखाती है कि जीवन में बदलाव जरूरी है, और इस बदलाव के लिए हर समय तैयार रहना चाहिए।

(ल) बिना भेदभाव के सेवा–हवा राजा-रंग, अमीर-गरीब या पेड़-पौधों में भेदभाव किए बिना सबको साँस लेने के लिए प्राणवायु देती है।

अंततः हम कह सकते हैं कि हवा हमें खुले मन से जीना, निस्वार्थ सेवा और हर परिस्थिति में लचीला बने रहना सिखाती है।

2. हवा (वायु) पृथ्वी पर जीवन और पर्यावरण के संतुलन के लिए आवश्यक है। हवा के प्रमुख कार्यों को हम इस प्रकार समझ सकते हैं–

(1) जैविक और शारीरिक कार्य–

(अ) श्वसन–हवा में मौजूद ऑक्सीजन मनुष्यों, जानवरों और सूक्ष्म जीवों के जीवित रहने के लिए आवश्यक है। यह कोशिकीय श्वसन में उपयोग होती है। **(ब) प्रकाश संश्लेषण**–पेड़-पौधे हवा से कार्बन डाइऑक्साइड ग्रहण करते हैं और सूर्य के प्रकाश की उपस्थिति में अपना भोजन बनाते हैं, जिससे ऑक्सीजन मुक्त होती है।

2. पर्यावरणीय और पारिस्थितिक कार्य–(अ) जल चक्र–हवा जलवाष्प को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाती है, जिससे बादल बनते हैं और वर्षा होती है, जो जल के पुनर्चक्रण के लिए आवश्यक है। **(ब) तापमान का नियमन**–हवा पृथ्वी की सतह पर गर्मी और ठंड को प्रसारित करती है, जिससे तापमान बना रहता है। यह गर्म या ठंडी हवा को प्रसारित कर मौसम को प्रभावित करती है।

3. भौतिक और ऊर्जा कार्य–(अ) पवन ऊर्जा–हवा का उपयोग पवन चक्कियों के माध्यम से बिजली उत्पादन में किया जाता है, जो एक नवीकरणीय ऊर्जा स्रोत है।

(ब) ध्वनि और गंध का संचरण–हवा के माध्यम से ध्वनि तरंगें और गंध एक जगह से दूसरी जगह जाती हैं।

4. अन्य उपयोग–(अ) परिवहन–हवा का उपयोग पाल वाली नावों और ग्लाइडर/हवाई जहाजों का उड़ाने में किया जाता है। **(ब) शुष्कन**–हवा गीली चीजों को सुखाने में मदद करती है।

संक्षेप में, हवा सिर्फ साँस लेने के लिए ही नहीं बल्कि पृथ्वी की पारिस्थितिकी, मौसम और आधुनिक जीवन की अनेक प्रक्रियाओं को सुचारु रूप से चलाने के लिए अपरिहार्य है।

● **भाषा-आधारित**

पर्यायवाची शब्द

आकाश–गगन, नभ, व्योम
बादल–जलधर, घन, मेघ
मधु–शहद, मकरंद, पुष्प-रस
समीर–हवा, वायु, पवन
तरु–पेड़, वृक्ष, द्रुम

विलोम शब्द

पिकी–काक
चातकी–चातक
शिखीन–शिखाहीन
आकाश–पाताल
चन्द्र–सूरज

कल्पना आधारित

1. 'वर्षा समीर' (बरसात की हवा) के अतिरिक्त, प्रकृति में समीर (हवा) के कई अन्य रूप और नाम हो सकते है, जो ऋतुओं, समय और स्थान के आधार पर भिन्न होते हैं।

कल्पना के आधार पर समीर के रूप इस प्रकार मान सकते हैं–

(अ) सुगंध समीर–जो फूलों के बागों से होकर बहती है, जिसमें खुश्बू होती है।

(ब) शीतल समीर–सुबह-सुबह बहने वाली ठंडी हवा, जो ताजगी और शांति लाती है। इसे उषा समीर भी कह सकते हैं।

(स) हिम समीर–पहाड़ों से आने वाली बर्फीली हवा जो ठंडक का अहसास कराती है।

(द) सागर समीर–दिन के समय समुद्र से तट की ओर आने वाली ठंडी और नम हवा।

(य) झंझा समीर–आँधी या तूफान के समय बहने वाली तेज हवा।

इसके अलावा प्राण समीर, उषा समीर, मधु समीर और मलय समर की भी कल्पना कर सकते हैं।

2. यदि प्रकृति में हवा (वायुमंडल) न होती, तो पृथ्वी का दृश्य अत्यंत भयावह, नीरस और निर्जीव होता। यह कल्पना ही रोंगटे खड़े कर देने वाली है। अगर हवा न होती, तो संसार ऐसा लगता–

(अ) निर्जीव और बंजर पृथ्वी–सबसे पहला प्रभाव जीवन पर पड़ता। हवा के बिना मनुष्य, पशु-पक्षी और सूक्ष्म जीव साँस नहीं ले पाते और चंद मिनटों में सब कुछ समाप्त हो जाता। धरती पर हरियाली का नामोनिशान नहीं होता, क्योंकि पौधे प्रकाश संश्लेषण के लिए हवा का उपयोग करते हैं।

(ब) ध्वनिहीन संसार–हवा ध्वनि तरंगों को ले जाने का माध्यम है। हवा के बिना, चारों तरफ पूरी तरह से सन्नाटा होगा। आप किसी को पुकारें, या कोई विस्फोट हो, कुछ भी सुनाई नहीं देगा, सब कुछ मूक होगा।

(स) अत्यधिक तापमान–हवा ऊष्मा को फैलाती है। हवा के बिना, दिन में सूरज की रोशनी में तापमान 100° सेंटीग्रेड से ऊपर जा सकता है और रात में –100° सेंटीग्रेड से भी नीचे जम सकता है। पृथ्वी जीवन के लिए पूरी तरह अनुपयुक्त हो जाएगी।

(द) जल चक्र रुक जाएगा–हवा बादलों को एक जगह से दूसरी जगह ले जाती है, जिससे बारिश होती है। हवा के बिना, वर्षा नहीं होगी और नदियाँ, तालाब और महासागर धीरे-धीरे वाष्पित होकर या जमकर खत्म हो जाएँगे।

(य) निर्वात जैसी स्थिति–पृथ्वी का वातावरण हवा के दबाव के कारण बना हुआ है। हवा न होने से वायुमंडलीय दबाव खत्म हो जाएग, जिससे महासागरों का पानी तुरंत उबलने लगेगा।

अंततः हवा के बिना पृथ्वी, चंद्रमा की तरह एक मृत, बंजर और शांत चट्टान बनकर रह जाएगी। हवा का न होना ही जीवन का अंत है।

- **खेल आधारित**

बुद्धिपरीक्षण

हवा के पर्यायवाची शब्द–अनिल, पवन, वायु, समीर।

2. मनोहर

अभ्यास

उच्चारण आधारित

- **शुद्ध लिखो और बोलो**– श्रमसिक्त, कृतज्ञता, सम्मिलित, बाध्यता, निष्कर्ष, आशीर्वाद।

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. एक दिन लेखक घनी बस्ती के बीच खड़ा हुआ था।
2. बिलासपुर छोड़ने के बाद लेखक जनकनगर रहने लगा था।
3. मनोहर का जीवन संघर्ष से भरा हुआ था।
4. मनोहर के पास ओढ़ने के लिए फटा कंबल था।
5. मनोहर की गुल्लक देखकर लेखक गद्गद् हो गया था।

- **लिखित**

1. वर्षों के बाद लेखक बिलासपुर में एक पारिवारिक समारोह में सम्मिलित होने आया था।

2. मनोहर राजस्थान में डूँगरपुर के पास एक छोटे-से गाँव का रहने वाला था।
3. लेखक के मन की थाह लेते हुए मनोहर ने उनसे कहा–"आज सर्दी कम है बाबूजी।"
4. लेखक ने मनोहर को आशीर्वाद देते हुए कहा था–"बेटा! तुम्हारी मेहनत अवश्य एक दिन रंग लाएगी।"
5. बचत के रुपयों से मनोहर ने रहने लायक स्थान बना लिया।

- **अपनी समझ से**

सही विकल्प

1. (क) 2. (क)
3. (क) 4. (घ)
5. (ख)

- **सोच-समझकर**

1. यदि मनोहर के पिता उसे छोड़कर न जाते, तो उसे इतनी कम उम्र में दर-दर नहीं भटकना पड़ता। उसका बचपन संघर्षों की जगह खेलकूद और पढ़ाई में बीतता।
2. यदि चाय के ठेले का मालिक उसकी मदद न करता, तो मनोहर को भूखा रहना पड़ता या फिर किसी गलत रास्ते पर जा सकता था। मालिक के सहारे ने ही उसे काम सीखने और स्वावलंबी बनने का आधार दिया।

- **पंक्तियों पर चर्चा**

1. **भावार्थ**–इसका अर्थ है कि जब वक्ता ने किसी की आवाज सुनी, तो ऐसा लगा जैसे उसने यह आवाज पहले भी कहीं सुनी है। वह आवाज उसे जानी पहचानी लगी।
2. **भावार्थ**–इसका तात्पर्य है कि कोई ऐसी अच्छी या प्रशंसात्मक बात सुनकर युवक बहुत खुश और उत्साहित हो गया। 'आँखें चमक उठना' एक मुहावरा है जो गहरी खुशी या उम्मीद को दर्शाता है।
3. **भावार्थ**–इसका अर्थ है कि उस व्यक्ति के व्यवहार में नम्रता और सौम्यता पहले से भी कहीं ज्यादा गहरी और स्पष्ट हो गयी थी। उसका स्वभाव उस वक्त बहुत ही विनम्र लग रहा था।
4. **भावार्थ**–इसका मतलब है कि वक्ता उस व्यक्ति का सम्मान अपने पिता के बराबर करता है। उसके जीवन में उस व्यक्ति का दर्जा और स्थान बिलकुल अपने पिता जैसा है।

- **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. चाय का ठेला,
2. आदर के साथ,
3. वही लड़का,
4. यादों का सिलसिला
5. भविष्य का

- **पाठ से आगे**

1. मैं भी मनोहर की तरह हिम्मत नहीं हारता। मेहनत और ईमानदारी से काम करता और अपनी परिस्थितियों को सुधारने के लिए निरंतर प्रयास करता।
2. यदि मनोहर धन की बचत न करता, तो वह कभी अपनी खुद की दुकान नहीं खोल पाता। बचत ने ही उसे आत्मनिर्भर बनाया और उसका भविष्य सुरक्षित किया।

- **भाषा-आधारित**

तत्सम शब्दों के तद्भव रूप–मातृ = माँ, पितृ = पिता, अश्रु = आँसू, आदित्यवार = इतवार, घट = घड़ा, सर्प = साँप।

तद्भव शब्दों के तत्सम रूप–कोयल = कोकिल, कुआँ = कूप, घी = घृत, आम = आम्र, अँगूठा = अंगुष्ठ, घर = गृह।

- **कल्पना आधारित**

यदि समाज में अनाथालय न होते, तो अनाथ बच्चों का जीवन अत्यंत कठिन और असुरक्षित हो जाता। अनाथालयों के बिना इन बच्चों के पास कोई सुरक्षित स्थान नहीं होता, जिससे उन्हें सड़कों पर रहने के लिए मजबूर होना पड़ता। सहायता के अभाव में ऐसे बच्चों के साथ बाल-मजदूरी, भीख माँगने या अन्य गलत कार्यों में शामिल होने का खतरा बहुत अधिक बढ़ जाता।

अतः, अनाथालय इन बच्चों को न केवल बुनियादी जरूरतें प्रदान करते हैं, बल्कि उन्हें समाज की मुख्यधारा से जोड़कर एक बेहतर नागरिक बनने में मदद करते हैं।

- **खेल आधारित**

बुद्धि परीक्षण (संज्ञा शब्द)– भारत, गोभी, भालू, शहर, गंगा, हिमालय, कमल, कक्षा, मिठास, गुच्छा, बुराई।

3. नादान दोस्त

अभ्यास

उच्चारण आधारित

- **शुद्ध लिखो और बोलो–** तकलीफ, तैयारियाँ, चिड़ियाँ, विश्वास, जिज्ञासा, सत्यानाश।

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. केशव के घर पर कार्निस के ऊपर चिड़िया ने अंडे दिए थे।
2. केशव-श्यामा ने कार्निस में थोड़ा-सा दाना (चावल) और पानी रखने का फैसला किया।
3. श्यामा अपनी माँ की आँख बचाकर मटके से चावल निकाल लायी।
4. केशव के हाथ रखते ही दोनों चिड़ियाँ उड़ गईं।
5. जब कोई इंसान अंडों को छू लेता है, तो वे गंदे हो जाते हैं और चिड़िया उन्हें नहीं सेती।

- **लिखित**

1. केशव और श्यामा के मन में सवाल उठते थे कि अंडे कितने बड़े होंगे, किस रंग के होंगे, कितने होंगे, उनमें से बच्चे कैसे निकलेंगे और उनका घोंसला कैसा होगा।
2. केशव ने कूड़ेदान की पुरानी टोकरी से छत बनायी और कपड़ों की गद्दी बनाकर अंड़ों के नीचे रख दी ताकि उन्हें आराम मिले और धूप न लगे।
3. अम्मा जी के सोते ही केशव ने चुपके से कमरे की कुंडी खोली और बाहर निकलकर अडों की हिफाजत करने लगा।
4. माँ ने केशव-श्यामा को कमरे के अंदर बंद कर दिया और खुद उन्हें पंखा झलने लगी।
5. केशव अपनी माँ के सामने रोनी सूरत बनाकर बोला कि उसने सिर्फ अंडों को गद्दी पर रखा था, उसे नहीं पता था कि छूने से अंडे खराब हो जाएँगे।

- **अपनी समझ से**

सही विकल्प

1. (ग) 2. (ख)
3. (क) 4. (ख)
5. (ख)।

- **सोच-समझकर**

1. अगर केशव अंडों को नहीं छूता, तो चिड़िया उन्हें गंदा समझकर नीचे नहीं गिराती और उनमें से सुरक्षित बच्चे निकलते।
2. केशव चिड़िया-चिड़ा को पास देखने या उनके साथ खेलने के लिए पकड़ सकता था, लेकिन उनसे लगाव होने के कारण अंत में उन्हें आजाद ही कर देता।

पंक्तियों पर चर्चा

- **किसने-किससे कहा–**

	किसने कहा	किससे कहा
1.	केशव ने	अपने आप से (मन में)
2.	केशव ने	श्यामा से
3.	केशव ने	केशव से
4.	अम्मा ने	केशव और श्यामा से
5.	अम्मा ने	केशव और श्यामा से

- **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. तीन-चार 2. प्यास
3. ऊपर 4. बच्चे
5. केशव

पाठ से आगे

- **मन के विचार**

1. यदि मैं केशव के स्थान पर होता, तो मैं अंडों को हाथ से छूने के बजाय अम्मा या बाबूजी से पूछकर उनकी सुरक्षा का सही इंतजाम करता, ताकि चिड़िया उन्हें छोड़ के न जाए।
2. यदि अम्मा उस समय जाग जातीं, तो केशव को बहुत डाँट पड़ती और अम्मा उसे फौरन उतार देतीं। शायद डर के मारे केशव के हाथ से अंडे सुरक्षित जाते या फिर घबराहट में गिर भी सकते थे।

भाषा आधारित

- **सर्वनाम शब्द**

1. उन्होंने
2. उसने, यह
3. तुमने, मुझे
4. तू
5. इसे, वह

- **कल्पना आधारित**

1. अंडे देने से पहले पक्षी एक सुरक्षित और ऊँची जगह तलाशते हैं, वे तिनके, सूखी घास, रुई और नरम पंखों को इकट्ठा करके एक मजबूत घोंसला बनाते हैं। इससे अंडों को गर्मी मिलती है और वे शिकारियों से बचे रहते हैं।
2. बीमार होने पर पक्षी अक्सर एकांत में जाकर आराम करते हैं। कल्पना की जाए तो, वे प्रकृति में मिलने वाली कुछ खास जड़ी-बूटियाँ या पत्तियाँ पहचान लेते होंगे जिन्हें खाकर वे ठीक हो जाते हैं। इसके अलावा धूप में बैठना और अपने शरीर को साफ रखना भी उनके इलाज का एक हिस्सा हो सकता है।

4. कितनी जमीन

अभ्यास

उच्चारण आधारित

- **शुद्ध लिखो और बोलो–** अभिलाषा, रजिस्ट्री, धौंकनी, वास्कट, सौदागर, दुभाषिया।

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. मेहनत करने से शारीरिक शक्ति और सेहत बनी रहती है।
2. दरिया के पास हरी-भरी घास और उपजाऊ जमीन थी।
3. कोल दीना को ऊँची पहाड़ी पर ले गए, जहाँ से दूर-दूर तक जमीन दिखाई देती थी।
4. कोल लोगों की जमीन की कीमत एक हजार रुपये रोजाना थी। शर्त यह थी कि सूरज उगने से लेकर डूबने तक दीना जितनी जमीन पैदल चलकर घेर लेगा, वह सब उसकी हो जाएगी।
5. लालच के कारण दीना थक कर मर गया और अंत में उसे अपनी कब्र के लिए सिर्फ छः फीट जमीन ही मिल सकी।

- **लिखित**

1. बड़ी बहन शहरी जीवन की बड़ाई करने लगी। बड़ी बहन शहर के माहौल की तारीफ करते हुए कहने लगी कि वहाँ अच्छे खानपान, सुंदर कपड़ों और नौटंकी, तमाशे भी मनोरंजन के लिए मिलते हैं।
2. सौदागर ने बताया कि नदी के उस पार कोलों की बस्ती में बहुत सस्ती और उपजाऊ जमीन मिल रही है।
3. दीना ने कोलों को अपने यहाँ की जमीन के विषय में बताया कि उसके यहाँ जमीन की कमी है और जो है वह ज्यादा उपजाऊ नहीं है।
4. सरदार ने कहा कि सूरज डूबने से पहले तुम जितनी जमीन घेर लोगे, वह सब तुम्हारी हो जाएगी। बस शर्त यह है कि तुम्हें सूरज डूबने से पहले उसी जगह वापस आना होगा जहाँ से चलना शुरू किया था।
5. दीना बहुत थक गया था, उसकी साँस फूल रही थी और डर के मारे उसका दिल जोर से धड़क रहा था कि कहीं वह वक्त पर न पहुँच पाए।

अपनी समझ से

- **सही विकल्प**

1. (ग) 2. (घ)
3. (ग) 4. (क)
5. (ख)

- **सोच-समझकर**

1. लोभ इंसान को स्वार्थी और अंधा बना देता है। जब कोई व्यक्ति लालच के वश में होता है, तो वह सही और गलत का भेद भूल जाता है। अपने लालच को पूरा करने के लिए इंसान झूठ, चोरी और धोखाधड़ी जैसे बुरे काम करने लगता है, इसलिए लोभ को पाप की जड़ कहा गया है।

2. किसान का जीवन बहुत ही कठिन और परिश्रमी होता है। वह कड़ी धूप, ठंड और बारिश की परवाह किए बिना खेत में दिन-रात मेहनत करता है ताकि देश को अनाज मिल सके। उनका जीवन सादगी और प्रकृति से जुड़ा होता है, लेकिन अक्सर उन्हें आर्थिक तंगी और मौसम की मार का सामना करना पड़ता है।

पंक्तियों पर चर्चा

● **किसने-किससे कहा-**

	किसने कहा	किससे कहा
1.	बड़ी बहन ने	छोटी बहन से
2.	छोटी बहन ने	बड़ी बहन से
3.	सौदागर ने	दीना से
4.	कोलों के सरदार ने	दीना से

● **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. कस्बे में एक सौदागर,
2. दोपहर,
3. सूरज छिपने,
4. आवाजों से,
5. दया और व्यंग्य।

पाठ से आगे

● **मन के विचार**

1. 'लालच बुरी बला है' एक बहुत सच्ची कहावत है। लालच सोचने-समझने की शक्ति को खत्म कर देता है। जब व्यक्ति के मन में लालच आ जाता है, तो वह जो उसके पास है उसमें खुश रहने के बजाय और पाने की अंधी दौड़ में शामिल हो जाता है। जैसा कि दीना की कहानी में दिखा और अधिक जमीन पाने के लालच ने अंततः उसकी जान ले ली। इसलिए हमें अपनी मेहनत पर भरोसा करना चाहिए और लालच से दूर रहना चाहिए।
2. दीना की पत्नी का मानना था कि गाँव का जीवन शहर के मुकाबले ज्यादा सुरक्षित है। क्योंकि गाँव का जीवन सरल होता है और वहाँ शहर जैसी भाग-दौड़ और दिखावा नहीं होता है। छोटी बहन का मानना था कि शहर में अमीरी आज है तो कल जा सकती है, लेकिन गाँव में खेती-बाड़ी से इतना मिल जाता है कि कोई भूखा नहीं सोता। शहर की चमक-दमक में इंसान अक्सर भटक जाता है और बुरी आदतों का शिकार हो जाता है, जबकि गाँव में व्यक्ति मेहनत करके इज्जत की रोटी खाता है।

भाषा आधारित

● **समास विग्रह-**

1. सात ऋषियों का समूह,
2. आठ अध्यायों का समूह,
3. पाँच रत्नों का समूह,
4. आठ आनों का समूह,
5. तीन फलों का समूह।

● **'परा' उपसर्ग**

1. जय + परा = पराजय,
2. क्रम + परा = पराक्रम,
3. धीन + परा = पराधीन,
4. मर्श + परा = परामर्श।

● **उचित विराम चिह्न**

1. दीना ने हसरत भरी नजर से सूरज की तरफ देखा। सूरज धरती को छू चुका था। वह बची-खुची अपनी शक्ति से आगे बढ़ा। कमर झुकाकर भागा, जैसे कि टाँगें साथ न देती हों। टेकड़ी पर पहुँचते-पहुँचते अँधेरा हो आया था। उसने ऊपर देखा सूरज छिप चुका था। उसके मुँह से एक चीख-सी निकल गई, ''ओह! मेरी सारी मेहनत व्यर्थ हो गई।'' यह सोचकर वह थमने को हुआ, लेकिन उसे ध्यान आया कि जो खड़े है उन्हें, तो सूरज अब भी दीख रहा होगा। सूरज छिपा नहीं है, फिर भी मुझको नहीं दीखता। यह सोचकर उसने लंबी साँस खींची और टेकड़ी पर आँख मूँदकर दौड़ा। चोटी पर अभी धूप थी। पास पहुँचा और सामने टोपी देखी। बराबर सरदार बैठा वहीं पेट पकड़े हँस रहा था। टाँगों ने जवाब दे दिया। वह मुँह के बल आगे को गिरा और उसके हाथ टोपी तक जा पहुँचे। ''खूब! खूब!'' सरदार ने कहा, ''देखो, उसने कितनी जमीन ले डाली।'' दीना का नौकर दौड़ा आया और उसने मालिक को उठाना चाहा, लेकिन उसने देखा कि मालिक के मुँह से खून निकल रहा है।

कल्पना आधारित

1. यदि दीना तथा कोलों के बीच दुभाषिया न होता, तो वे इशारों, शारीरिक संकेतों और

चेहरे के हाव-भाव के माध्यम ये एक-दूसरे की बात समझने की कोशिश करते। इसके अलावा, वे जमीन पर चित्र बनाकर या वस्तुओं को दिखाकर भी अपनी बात समझा सकते थे।

2. दीना के मन में जमीन का लालच इसलिए बढ़ रहा था क्योंकि वह कम से कम कीमत में ज्यादा से ज्यादा सम्पत्ति और अमीरी पाना चाहता था। जब उसने देखा कि उसे अपनी पसंद की जितनी चाहे उतनी उपजाऊ जमीन मिल सकती है, तो उसकी इच्छाएँ अनियंत्रित हो गयीं और वह बेहतर जमीन का टुकड़ा पाने के चक्कर में अपनी हदों को भूल गया।

खेल आधारित

रंगों के नाम–

1. गेरुआ,
2. फिरोजी,
3. आसमानी,
4. लाल,
5. गुलाबी,
6. केसरिया,
7. सुनहरा,
8. नारंगी,
9. काला,
10. सलेटी,
11. सफेद,
12. हरा।

5. कुछ काम करो

अभ्यास

उच्चारण आधारित

- **शुद्ध लिखो और बोलो–** उपयुक्त, सदुपाय, अखिलेश्वर, अवलंबन, मरणोत्तर, वस्तु-विधान।

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. मनुष्य (नर) को अपना मन निराश नहीं करना चाहिए।
2. कवि जग (संसार) को निरा सपना न समझने के लिए कह रहा है।
3. हमें स्वयं अपना रास्ता (पथ) प्रशस्त करना चाहिए।
4. ईश्वर ने मनुष्य को हाथ (कर) दान स्वरूप दिए हैं।
5. हमें कोई भी धन अलभ्य (जो प्राप्त न हो सके) नहीं समझना चाहिए।

- **लिखित**

1. हमें अपना तन और समय व्यर्थ नहीं गँवाना चाहिए।
2. हमें सदैव इस बात का ज्ञान रहे कि 'हम भी कुछ हैं।' यानिकि हमें अपने गौरव और अस्तित्व का ज्ञान होना चाहिए।
3. हमें अपने साधन को कभी निष्फल या व्यर्थ नहीं होने देना चाहिए।
4. मनुष्य का जन्म तब सार्थक माना जा सकता है जब वह कर्मशील बने और अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए परिश्रम करें।
5. जब हमें कोई मनोवांछित वस्तु प्राप्त नहीं होती तो इसमें किसी और का नहीं बल्कि अपने प्रयास की कमी का दोष समझना चाहिए।

अपनी समझ से

- **सही विकल्प**

1. (क)
2. (ख)
3. (क)
4. (ख)
5. (ख)

- **सोच-समझकर**

1. हम अपने जीवन को कठिन परिश्रम (मेहनत), दृढ़ निश्चय और अपने शरीर या मन का सही उपयोग करके सफल बना सकते हैं।
2. मनुष्य के जन्म का मूल उद्देश्य संसार में रहकर अच्छे कर्म करना, अपनी क्षमता को पहचानना और समाज के लिए उपयोग बनना है।

- **पंक्तियों पर चर्चा**

1. कवि कहते हैं कि इस संसार में जन्म लिया है, तो कुछ ऐसा महान कार्य करो जिससे तुम्हारा नाम अमर हो जाए।
2. कवि कहते हैं कि अपने इस शरीर और जीवन को व्यर्थ न जाने दें, बल्कि इसका उपयोग सार्थक और अच्छे कार्यों के लिए करें।
3. कवि कहते हैं कि आप मनुष्य हैं जो ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ रचना है। इसलिए कठिन समय या असफलता मिलने पर अपने मन को

छोटा न करें और कभी निराश न हों। अपनी क्षमताओं पर विश्वास रखें और निरंतर आगे बढ़ें।

4. कवि कहता है कि हे मनुष्य ईश्वर ने काम करने के लिए हमें हाथ (कर) और शक्तियाँ दी हैं, ताकि हम अपनी किस्मत खुद बदल सकें।
5. कवि कहता है कि यदि हम मेहनत करें, तो दुनिया की कोई भी सफलता या वस्तु ऐसी नहीं है जिसे प्राप्त न किया जा सके। कुछ भी अलभ्य (जो मिल न सके) नहीं है।

- **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. जन्म हुआ, 2. सँभलो,
3. अखिलेश्वर, 4. मरणोत्तर,
5. यह दोष।

पाठ से आगे

- **मन के विचार**

1. यह कथन सही है कि, ''जो व्यक्ति भाग्य के भरोसे बैठे रहते हैं, वे जीवन में कभी आगे नहीं बढ़ पाते हैं।'' भाग्य केवल उन्हीं का साथ देता है जो मेहनत करते हैं। हाथ पर हाथ रखकर बैठने से सफलता नहीं मिलती; उसके लिए निरंतर प्रयास और कर्म करना आवश्यक है।
2. जीवन में आगे बढ़ने के लिए हमें एक लक्ष्य निर्धारित करना चाहिए और असफलताओं से घबराने के बजाय उनसे सीख लेनी चाहिए। आत्मविश्वास और सकारात्मक सोच ही हमें प्रगति की राह पर ले जाती है।

भाषा आधारित

- **प्रत्यय से बे शब्द**

1. इया–बिटिया, डिबिया, लठिया
2. इक–सामाजिक, धाार्मिक, आर्थिक
3. वान–धनवान, बलवान, गुणवान
4. ऐरा–सपेरा, लुटेरा, चचेरा
5. दार–दुकानदार, चमकदार, ईमानदार

- **अनेकार्थक शब्द**

1. कर–हाथ, टैक्स, किरण
2. उत्तर–जवाब, एक दिशा, बाद का
3. अंक–संख्या, गोद, नाटक का अध्याय
4. कनक–सोना, धतूरा, गेहूँ
5. धन–संपत्ति, योग (जोड़), पूँजी।

- **कल्पना आधारित**

1. एक उद्यमी (परिश्रमी) व्यक्ति का जीवन अनुशासन, कड़ी मेहनत और निरंतर प्रयासों से भरा होता है। वह अपने समय का सही उपयोग करता है और आने वाली चुनौतियों से घबराने के बजाय उनका डटकर सामना करता है। उसका जीवन प्रेरणादायक होता है और वह अपनी मेहनत से समाज में अपनी एक अलग पहचान बनाता है।
2. अखिलेश्वर (ईश्वर) ने इस जगत की रचना बहुत ही धैर्य और अपनी असीमित शक्तियों से की होगी। उन्होंने प्रकृति में संतुलन बनाने के लिए सूरज, चाँद, पेड़-पौधे और नदी-पहाड़ों को बहुत सोच-समझकर सजाया होगा। ईश्वर ने हर जीव-जंतु को उसकी जरूरत के अनुसार खूबियाँ दी होंगी ताकि सृष्टि सुंदर और जीवंत बनी रहे।

खेल आधारित

- **बुद्धि-परीक्षण**

1. तरबूज,
2. मिट्टी के बर्तन या ईंट

6. कश्मीर की यात्रा

अभ्यास

उच्चारण आधारित

- **शुद्ध लिखो और बोलो–** आलीशान, अजनबियों, बारूद, हौंसला, कश्मीर, चश्मेशाही।

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. लेखक ने कश्मीर की यात्रा का कार्यक्रम दिल्ली से बनाया था।

2. जम्मू मंदिरों के लिए प्रसिद्ध है। इसे मंदिरों का शहर भी कहा जाता है।
3. वैष्णोदेवी का मंदिर जम्मू के पास कटरा में बना हुआ है।
4. 'चार चिनार' श्रीनगर की डल झील के बीच में स्थित एक छोटा सा द्वीप है, जहाँ चिनार के चार पेड़ लगे हैं।
5. 'चश्मेशाही' के झरने (सोते) का पानी बहुत ही ठंडा, मीठा और पाचक माना जाता है।

- **लिखित**

1. लेखक के कुछ साथी चढ़ाई की थकान और समय की कमी कारण वैष्णोदेवी नहीं जाना चाहते थे, क्योंकि वे सीधे कश्मीर पहुँचना चाहते थे।
2. पहाड़ों के टेढ़े-मेढ़े और घुमावदार रास्तों के कारण बस बार-बार मुड़ रही थी, इसलिए लेखक ने मजाक में कहा कि, "बस को भी चक्कर आने लगे।"
3. लेखक ने बताया है कि पहलगाँव बहुत ही खूबसूरत और शांत जगह है, जो लिद्दर नदी के किनारे बसा है। यह अमरनाथ यात्रा का मुख्य पड़ाव भी है।
4. बाबा अमरनाथ की मुख्य विशेषता वहाँ की गुफा में प्राकृतिक रूप से बनने वाला बर्फ का शिवलिंग है, जो चन्द्रमा की कलाओं के साथ घटता-बढ़ता है।
5. लेखक के अनुसार गुलमर्ग का अर्थ है–"फूलों की घाटी।" यह एक विशाल हरा-भरा मैदान है जो ऊँचे पहाड़ों से घिरा है और अपनी प्राकृतिक सुंदरता व गोल्फ कोर्स के लिए मशहूर है।

प्रत्यास्मरण

- **गद्यांश आधारित प्रश्नों के उत्तर–**

1. लेखक हिमालय की इस खूबसूरत घाटी को और नजदीक से देखने के लिए दोबारा आने का इरादा (निश्चय) करके अपने घरों की ओर लौट पड़े।
2. कश्मीर में सेब के बागों की बहुतायत है।
3. लेखक ने कश्मीर को 'स्वर्ग' की उपमा दी है। यह उपमा कश्मीर की सुंदरता, वहाँ के बागों, खेतों और पहाड़ों को देखते हुए दी है।
4. लेखक ने ऐसा इसलिए कहा है क्योंकि कश्मीर की सुंदरता अतुलनीय है। वहाँ सेब के बाग, बादाम की बाड़ियाँ, केसर के खेत, मल्लाहों के गीत, बर्फ की चादर ओढ़े हिमालय के पहाड़, झीलों में झाँकती चोटियाँ और वहाँ के भोले-भाले मेहमाननवाज लोग मिलकर इसे धरती का स्वर्ग बनाते हैं। लेखक के अनुसार, इतनी सुंदरता कहीं और नहीं मिलती।

अपनी समझ से

- **सही विकल्प**

1. (ख) 2. (ग)
3. (क) 4. (घ)
5. (क)

- **सोच-समझकर**

1. यदि लेखक हठपूर्वक वैष्णोदेवी की यात्रा पर जाता, तो वह पैदल चढ़ाई करके या खच्चरों की सहायता से वहाँ पहुँचता। उस समय आज की तरह सुगम रास्ते या आधुनिक परिवहन के साधन उपलब्ध नहीं थे, इसलिए चढ़ाई और कठिन रास्तों को पार करके ही मंदिर तक पहुँचा जा सकता था।
2. अमरनाथ गुफा में बर्फ के शिवलिंग (हिमलिंग) का बनना एक अद्‌भुत प्राकृतिक प्रक्रिया है। माना जाता है कि गुफा की छत से गिरने वाली पानी की बूँदों के जमने से यह आकार बनता है। चंद्रमा की कलाओं के साथ वातावरण की नमी और तापमान में होने वाले सूक्ष्म परिवर्तनों के कारण, यह हिमलिंग शुक्ल पक्ष में बढ़ता है और कृष्ण पक्ष में धीरे-धीरे घटने लगता है। इसे श्रद्धालु भगवान शिव का चमत्कार मानते हैं।

पंक्तियों पर चर्चा

- **पंक्तियों का भाव**

1. इस पंक्ति में आश्चर्य और जिज्ञासा का भाव है। लेखक यह कहना चाहते हैं कि स्वर्ग की सुंदरता केवल कल्पनाओं में सुनी जाती है, लेकिन कश्मीर की प्राकृतिक सुंदरता को देखकर ऐसा लगता है मानो साक्षात स्वर्ग धरती पर उतर आया हो।
2. यह पंक्ति कठिन यात्रा या थकान के बाद गंतव्य पर पहुँचने के सुकून को दर्शाती है। 'राम राम करना' यहाँ घबराहट या भक्ति

का सूचक हो सकता है, जिससे पता चलता है कि रास्ता दुर्गम था और रामबन पहुँचने पर यात्रियों ने चैन की साँस ली।

3. यहाँ सुरंग एक विभाजक की तरह है। जैसे ही लेखक सुरंग के अंधेरे से बाहर निकलते हैं, उनके सामने कश्मीर की अलौकिक सुंदरता आ जाती है, जिसकी तुलना उन्होंने स्वर्ग के सुखद अहसास से की है।
4. यह पंक्ति प्रशंसा और विस्मय के भाव को प्रकट करती है। लेखक नदी के निर्मल और मनमोहक रूप से इतने प्रभावित हैं कि उन्हें अपने जीवन की पुरानी सभी स्मृतियाँ फीकी लगने लगती हैं।
5. यह पंक्ति कश्मीर को भारत का सबसे अनमोल रत्न बताती है। इसका भाव यह है कि कश्मीर की सुंदरता इतनी अद्वितीय और महत्वपूर्ण है कि इसके बिना भारत दर्शन की यात्र अधूरी मानी जाती है।

- **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. मंदिर, 2. चढ़ाई का,
3. सुरंग, 4. आगे,
5. हम।

पाठ से आगे

- **मन के विचार**

1. यदि लेखक के साथ भारी शरीर वाले मित्र न होते, तो शायद उन दुर्गम और ऊँचाई वाले स्थानों पर भी जा पाते जहाँ चढ़ना कठिन होता है। वे लंबी पैदल यात्रा, पहाड़ियों की चोटी पर स्थित मंदिरों या संकरी गलियों वाले पुराने बाजारों का भ्रमण अधिक फुर्ती और विस्तार से कर पाते। भारी शरीर वाले मित्र की शारीरिक सीमाओं के कारण शायद उन्हें अपनी यात्रा की गति धीमी रखनी पड़ी होगी।
2. यदि जम्मू-कश्मीर का तापमान 40° सेंटीग्रेड के बीच हो जाए, तो वहाँ की बर्फ पिघल जाएगी, हरियाली झुलस जाएगी और नदियाँ सूखने लगेंगी। इससे वहाँ का प्रकृतिक सौंदर्य पूरी तरह नष्ट हो जाएगा और वह एक ठंडे स्वर्ग के बजाय गर्म रेगिस्तान जैसा महसूस होने लगेगा।

भाषा आधारित

- **सर्वनाम शब्द**

(क) वे (ख) कौन
(ग) अपना (घ) तुम्हारा, क्या
(ङ) मैं।

- **क्रिया विशेषण शब्द**

(क) कल, (ख) जल्दी,
(ग) अचानक, (घ) पैदल,
(ङ) प्रतिदिन।

- **कल्पना आधारित**

1. बर्फीले स्थानों पर लोगों की दिनचर्या काफी चुनौतीपूर्ण होगी। अत्यधिक ठंड के कारण उनकी सुबह देर से शुरू होती होगी। वे खुद को गर्म रखने के लिए भारी ऊनी कपड़ों और कांगडी (अंगीठी) या हीटर का उपयोग करते होंगे। उनका अधिकांश समय बर्फ हटाने और घरेलू कामकाज में बीतता होगा। खानपान में वे गर्म पदार्थों का अधिक सेवन करते होंगे और शाम होते ही ठंड से बचने के लिए घरों के भीतर सुरक्षित हो जाते होंगे।
2. कश्मीर में बर्फ से ढँके पहाड़ किसी जादुई दुनिया की तरह लगते होंगे। सूरज की रोशनी पड़ने पर वे चाँदी की तरह चमकते होंगे। चारों ओर बिछी सफेदी की चादर, पेड़ों की टहनियों पर जमी बर्फ और जमी हुई झीलें एक अत्यंत शांत और मनमोहक दृश्य प्रस्तुत करती होंगी। यह नजारा प्रकृति की सुंदरता का एक अद्‌भुत उदाहरण होता होगा।

खेल आधारित

- **बुद्धि परीक्षण**

पर्यटन स्थलों के नाम—

1. पहलगाँव, 2. गुलमर्ग,
3. पतनीटॉप, 4. निशातबाग,
5. शालीमार बाग, 6. बेरीनाग,
7. अनंतनाग, 8. अमरनाथ,
9. चश्मेशाही, 10. बनिहाल दर्रा,
11. चंदनबाड़ी, 12. चार चिनार।

7. सोना

उच्चारण आधारित

- **शुद्ध लिखो और बोलो–**

स्निग्ध, अनुष्ठान, आश्वस्त, निश्चय, क्रियाशीलता, बाहुल्य।

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. अपनी संतान की सुरक्षा हेतु मृगी माँ ने अपने प्राण दे दिए।
2. दूध पीकर और भीगे चने खाकर सोना कुछ देर कंपाउंड में चारों पैरों को संतुलित कर चौकड़ी भरती।
3. लेखिका के घर बिल्ली गोधूलि, कुत्ते हेमंत-वसंत, कुतिया फ्लोरा पालतू पशु थे।
4. सोना ने फ्लोरा के पिल्लों को अपनी सेना में शामिल कर लिया था।
5. लेखिका बद्रीनाथ की यात्रा करने गई थी।

- **लिखित**

1. सोना का छोटा-सा मुँह और बड़ी-बड़ी नम आँखें थीं, जब वह उन्हें देखती, तो ऐसा लगता मानो वे किसी क्षण फूट पड़ेंगी। उनमें दबी हुई हलचल की बिजली सी उसकी आँखों में चमक उठती। हर कोई उसकी सरल और मासूम सूरत से इतना प्रभावित था कि चंपक रंग की सुंदरता के अनुरूप सोना, सुवर्णा, स्वर्णलेखा आदि नाम उसकी पहचान बन गए।
2. विद्यालय में प्रार्थना करने की घंटी बजने पर सोना प्रार्थना के मैदान में पहुँच जाती और उसके समाप्त होने पर छात्रावास के समान ही कक्षाओं के भीतर-बाहर चक्कर लगाना आरम्भ करती।
3. बच्चों द्वारा 'सोना-सोना' पुकारने पर सोना बच्चों की पंक्ति के ऊपर से छलाँग लगाकर एक ओर से दूसरी ओर कूदती रहती।
4. एक वर्ष व्यतीत हो जाने पर सोना की टाँगें अधिक सुडौल हो गईं और खुरों के कालेपन में और चमक आ गई। गर्दन लचीली हो गई और खिंची कज्जल कोर में नीचे गोलक और दृष्टि ऐसी लगती थी, मानो नीलम के बल्बों में उजली चमक हो।
5. लेखिका के बद्रीनाथ जाने के बाद सोना को माली ने मैदान में लंबी रस्सी से बाँधना शुरू कर दिया। एक दिन बंधन की सीमा भूलकर वह ऊँचाई तक उछली और रस्सी के कारण मुँह के बल धरती पर आ गिरी। वही उसकी अंतिम साँस और अंतिम उछाल थी।

- **प्रत्यास्मरण**

1. कर्मचारी लोग लेखिका के आने के साथ ही कोई दुखद समाचार नहीं देना चाहते थे।
2. माली की भावुकता ने बिना बोले ही सब कुछ कह दिया।
3. सोना छात्रावास के सन्नाटे और फ्लोरा के तथा लेखिका के अभाव के कारण ज्यादा व्याकुल हो गयी।
4. सोना का अंत, एक दिन बंधन की सीमा भूलकर बहुत ऊँचाई तक उछली और रस्सी के कारण मुँह के बल धरती पर आ गिरी। वही उसकी अंतिम साँस और अंतिम उछाल थी, के साथ हुआ।

- **अपनी समझ से**

सही-विकल्प

1. (घ) सुनहरा
2. (क) कच्ची सब्जियाँ
3. (ख) गोधूलि
4. (घ) सभी ने
5. (घ) सभी को

- **सोच-समझकर**

1. यदि बालिका उस मृतप्राय एवं अनाथ मृग शावक (सोना) को लेखिका (महादेवी वर्मा) के पास न लाती, तो वह कोमल जीव भूख, प्यास या कमजोरी के कारण निश्चित रूप से मर जाता। वह असहाय था और उसके बचने की आशा अत्यंत कम थी। ऐसे में या तो वह किसी जंगली जानवर का शिकार बन जाता या फिर अंततः दम तोड़ देता।
2. पशु-पक्षियों के साथ हमें प्रेम, करुणा और मित्रतापूर्ण व्यवहार करना चाहिए। वे बेजुबान

होते हैं, इसलिए उनकी रक्षा, भरण-पोषण और सुरक्षा हमारी जिम्मेदारी है। उन्हें बिना कारण सताना नहीं चाहिए, बल्कि उनके प्राकृतिक आवास का सम्मान करना चाहिए। उनके प्रति संवेदना दिखाते हुए हमें उन्हें भोजन-पानी उपलब्ध कराना चाहिए।

- **पंक्तियों पर चर्चा (पंक्ति का भाव)**

1. महादेवी वर्मा द्वारा रचित संस्मरण रेखाचित्र 'सोना' (मृग शावक) के संदर्भ में, यह पंक्ति उस मार्मिक क्षण को दर्शाती है जब 'सोना' हिरनी की मृत्यु होती है। वह अपने जीवन की अंतिम चेष्टा के रूप में एक अंतिम उछाल लेती है और वहीं गिरकर दम तोड़ देती है, जो उसके चंचल जीवन के अचानक अंत का प्रतीक है।

2. यह पंक्तियाँ महादेवी वर्मा द्वारा रचित संस्मरण 'सोना' (मेरा परिवार) से ली गई हैं। इसमें एक अनाथ हिरनी के बच्चे (मृग शावक) को एक बालिका द्वारा लेखिका के पास लाने और उसके पालन-पोषण का वर्णन है।

- **सही-गलत**

1. (✗), 2. (✓), 3. (✓), 4. (✓), 5. (✗)।

- **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. छलक पड़ेंगी
2. जीवित शावक
3. कुंकुम
4. बद्रीनाथ
5. भावुकता

- **पाठ से आगे (मन के विचार)**

1. यदि कोई मुझे एक मृतप्राय: (मरणासन्न) मृग शावक सौंपता है, तो मेरी पहली प्राथमिकता उसकी जान बचाने की होगी। मैं तुरंत उसे गर्म और सुरक्षित स्थान पर रखकर, प्राथमिक उपचार (जैसे– पानी या दूध पिलाना) दूँगा और बिना देरी किए वन विभाग या पशु चिकित्सक से संपर्क करूँगा।
2. अनाथ और बेसहारा पशु-पक्षियों के संरक्षण के लिए सरकार को नंदी शालाओं व आश्रय स्थलों का निर्माण, घायल पशुओं हेतु 24×7 एम्बुलेंस सेवा, नसबंदी कार्यक्रम, पशु क्रूरता कानूनों का सख्त कार्यान्वयन और स्वयंसेवी संस्थाओं को वित्तीय सहायता जैसी व्यवस्थाएँ करनी चाहिए।

- **भाषा आधारित**

1. छात्रावास – छात्रों के लिए आवास
   पंक्तिबद्ध – पंक्ति में बद्ध
   रसोईघर – रसोई के लिए घर
   व्यथाकथा – व्यथा की कथा
   गुणहीन – गुणों से हीन
   विद्यालय – विद्या के लिए आलय

   वाक्यांश के लिए एक शब्द

   अकथित, अथाह, सुनहरी, ग्रीष्मावकाश, जिज्ञासु।

- **कल्पना आधारित**

1. पशु-पक्षियों के बिना मानव जीवन नीरस, असंतुलित और भयावह हो जायेगा। हमारा सुबह का संगीत (चहचहाहट) और प्रकृति का सौंदर्य समाप्त हो जायेगा। पारिस्थितिक तंत्र टूट जाएगा, जिससे परागण की कमी, कीटों का प्रकोप, खाद्य संकट और भयंकर प्रदूषण जैसी समस्याएँ सामने आएँगी और जीवन जीना दूभर हो जाएगा।
2. यदि प्रकृति अपना कार्य (चक्र) बंद कर दे तो पृथ्वी पर जीवन तुरंत रुक जायेगा। साँस लेने के लिए स्वच्छ हवा नहीं होगी, भोजन की कमी से अकाल पड़ जायेगा और जल स्रोत सूख जाएँगे। यह एक भयावह रेगिस्तान जैसी स्थिति होगी, जहाँ हरियाली की जगह बंजर जमीन होगी और अंतत: मनुष्य व पशु-पक्षी विलुप्त हो जाएँगे।

- **खेल आधारित (बुद्धि परीक्षण)**

पशु-पक्षियों के नाम– बकरी, भैंस, शेर, खरगोश, मुर्गी, हिरनी, कबूतर, बतख, टिटहरी, चकवा, नीलकंठ, गीदड़।

8. भारत कोकिला : एम. एस. सुब्बुलक्ष्मी

उच्चारण आधारित

- **शुद्ध लिखो और बोलो–**

छात्र अपने अध्यापक की सहायता से स्वयं करें।

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. पत्र मानवी ने निहारिका को एम. एस. सुब्बुलक्ष्मी के बारे में लिखा।

2. मानवी की नींद एम. एस. सुब्बुलक्ष्मी की मधुर आवाज से टूटी।
3. सुब्बुलक्ष्मी का जन्म 16 सितम्बर 1916 को मदुरै में हुआ।
4. एम. एस. सुब्बुलक्ष्मी के फिल्मी जीवन का आरंभ 'सेवा सदनम्' फिल्म से हुआ।
5. सुब्बुलक्ष्मी को भारत रत्न से 1998 में सम्मानित किया गया।

- **लिखित**

1. दक्षिण भारत का शहर मदुरै प्राचीन और प्रसिद्ध मंदिरों के लिए जाना जाता है।
2. सुब्बुलक्ष्मी की माँ का नाम षण्मुखवडिवु अम्माल था, जो वीणा बजाती थीं और पिता सुब्रमण्यम अय्यर एक गायक थे। इनकी दादी अक्कामल प्रसिद्ध वायलिन वादक थीं। इसलिए हम कह सकते हैं कि सुब्बुलक्ष्मी को संगीत विरासत में मिला।
3. एम. एस. सुब्बुलक्ष्मी का संगीत से परिचय उनकी माँ ने ही कराया। उन्होंने सुब्बुलक्ष्मी को पं. नारायण राव व्यास से प्रशिक्षण दिलवाया।
4. सुब्बुलक्ष्मी ने साल 1966 में यूनाइटेड नेशनल जनरल असेंबली के लिए न्यूयार्क में प्रदर्शन कर इतिहास रचा।
5. पंडित जवाहरलाल नेहरू एम. एस. सुब्बुलक्ष्मी के गीत से इतने प्रभावित थे कि उन्होंने उनके बारे में कहा– मैं कौन हूँ, एक रानी के सामने एक साधारण प्रधानमंत्री, एक संगीत की रानी।

- **प्रत्यास्मरण**

1. सरोजनी नायडू ने उन्हें भारत की कोकिला कहा।
2. पंडित जवाहरलाल नेहरू एम. एस. सुब्बुलक्ष्मी के गीत से इतने प्रभावित थे कि उन्होंने उनके बारे में कहा– मैं कौन हूँ, एक रानी के सामने एक साधारण प्रधानमंत्री, एक संगीत की रानी।
3. उस्ताद बड़े गुलाम अली खान ने सुब्बुलक्ष्मी को सुरालक्ष्मी कहा।
4. 'तपस्विनी' कहकर सुब्बुलक्ष्मी को स्वर साम्राज्ञी लता मंगेशकर ने संबोधित किया।

- **अपनी समझ से**

सही-विकल्प

1. (ग) वायलिन वादिका
2. (ग) मीरा
3. (क) एम. एस. सुब्बुलक्ष्मी
4. (घ) सन् 1938 में
5. (क) 11 दिसंबर 2024

- **सोच-समझकर**

1. एम. एस. सुब्बुलक्ष्मी ने फिल्मों में अभिनय इसलिए बंद कर दिया क्योंकि वे अपना संपूर्ण जीवन शास्त्रीय और गायन के लिए समर्पित करना चाहती थीं। उनका मुख्य ध्यान और रुचि अभिनय के बजाय संगीत कला पर थी। 1945 में 'मीरा' जैसी सफल फिल्म के बाद, उन्होंने अभिनय से पूरी तरह दूरी बना ली।
2. प्रसिद्ध व्यक्तित्वों के उनके असाधारण योगदान, उपलब्धियों और समाज पर सकारात्मक प्रभाव के लिए विभिन्न सम्मान दिए जाते हैं। यह सम्मान विशिष्ट प्रतिभा को पहचानने, उत्कृष्ट कार्य को प्रोत्साहित करने, दूसरों को प्रेरित करने, उच्च नैतिक मूल्य स्थापित करने और राष्ट्र के सामाजिक, सांस्कृतिक व वैज्ञानिक विकास में योगदान को मान्यता देने के लिए प्रदान किए जाते हैं।
3. किसी क्षेत्र में सफलता और प्रसिद्धि पाने के लिए कड़ी मेहनत, दृढ़ता और आत्म-अनुशासन सबसे महत्त्वपूर्ण गुण हैं। सफलता के लिए लक्ष्य निर्धारण, आत्मविश्वास, समय प्रबंधन और असफलता से न डरकर सीखने का लचीलापन भी अनिवार्य है। इसके अलावा विनम्रता, ईमानदारी, जुनून और निरंतर सीखते रहने की इच्छा आपको विशिष्ट बनाती है।

- **सही मिलान**

1. (ङ), 2. (घ), 3. (ग), 4. (ख) 5. (क)।

- **सही-गलत**

1. (✗), 2. (✓), 3. (✗), 4. (✓), 5. (✗)।

- **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. 2024
2. भारत रत्न
3. षण्मुखवडिवु अम्माल
4. पं. नारायण राव व्यास
5. 1974

- **पंक्तियों पर चर्चा**

1. "आवाज का जादू मुझ पर इस कदर छाया था" वाक्यांश किसी के स्वर या गायन के प्रति अत्यधिक आकर्षण और सम्मोहन को दर्शाता है। मानवी ने जब सुस्सुलक्ष्मी का मधुर गाना सुना तो यकायक उसके मुँह से ये शब्द निकले।
2. एम. एस. सुब्बुलक्ष्मी को संगीत वास्तव में विरासत में मिला था, क्योंकि उनका जन्म मदुरै के एक देवदासी परिवार में हुआ था जहाँ संगीत जीवन का हिस्सा था। उनकी माँ वीणा वादक षण्मुखवडिवु, उनकी पहली गुरु थीं। उन्होंने शास्त्रीय संगीत की शिक्षा कम उम्र में ही शुरू कर दी थी और 13 साल की उम्र में मंच पर प्रस्तुति देना शुरू कर दिया था।

   सुब्बुलक्ष्मी ने न केवल विरासत को संभाला, बल्कि उसे अपनी दिव्य आवाज से नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया।
3. एम. एस. सुब्बुलक्ष्मी (1916-2004) कर्नाटक संगीत की एक दिग्गज गायिका थीं, जिन्हें "संगीत की रानी" और भारत रत्न (सर्वोच्च नागरिक सम्मान) प्राप्त करने वाली पहली संगीतकार होने का गौरव प्राप्त है। 1966 में संयुक्त राष्ट्र (UN) में प्रस्तुति देने वाली पहली भारतीय संगीतकार के रूप में, उन्होंने शास्त्रीय संगीत को वैश्विक पहचान दिलाई। उनके गायन में भक्ति और रागों का अद्‌भुत संगम था, जो आज भी अमर है।

- **पाठ से आगे (मन के विचार)**

1. मेरा पसंदीदा संगीतकार पंडित रविशंकर हैं। सितार के जादूगर के रूप में प्रसिद्ध, उन्होंने भारतीय शास्त्रीय संगीत को वैश्विक मंच पर लोकप्रिय बनाने में अहम भूमिका निभाई और पश्चिमी संगीत के साथ फ्यूजन के प्रयोग भी किए। उनका संगीत भावनात्मक रूप से गहरा और तकनीकी रूप से अत्यंत परिष्कृत होता है, जो श्रोताओं को शांति और ऊर्जा का अद्‌भुत अनुभव प्रदान करता है।

   उनके संगीत में एक विशेष प्रकार की आत्मा है, जो मन को सुकून और आत्मा को शांति प्रदान करती है।
2. मन में उठी जिज्ञासा का समाधान खोजने के लिए मैं अक्सर अपने माता-पिता, शिक्षकों या वरिष्ठ और अनुभवी लोगों से बात साझा करता हूँ। जब उन लोगों से उत्तर नहीं मिलता तो मैं पुस्तकों, ज्ञानकोषों, इंटरनेट या विश्वसनीय वेबसाइटों के माध्यम से अपनी जिज्ञासा शांत करता हूँ।

   जिज्ञासा हमें निरंतर सीखने और नई खोज करने के लिए प्रेरित करती है।

- **भाषा आधारित**

1. (क) सिपाही ने चोर को पकड़ा। वाक्य में <u>**सिपाही**</u> कर्ता कारक है।

   (ख) रमेश ने मोहन को पत्र लिखा। वाक्य में <u>**मोहन**</u> कर्म कारक है।

   (ग) राम ने कलम से पत्र लिखा। वाक्य में <u>**कलम से**</u> करण कारक है।

   (घ) यह पुस्तक मोहन की है। वाक्य में <u>**मोहन की**</u> संबंध कारक है।

   (ङ) हे राम! मेरी पुकार सुनो। वाक्य में <u>**हे राम!**</u> सम्बोधन कारक है।
2. (क) तुम तो बहुत अच्छे हो। वाक्य में <u>**तो**</u> निपात है।

   (ख) यह काम दस बजे तक खत्म हो जायेगा। वाक्य में <u>**तक**</u> निपात है।

   (ग) केवल तुम ही यह कर सकते हो। वाक्य में <u>**ही**</u> निपात है।

   (घ) आज दिन भर सोते ही रहोगे। वाक्य में <u>**ही**</u> निपात है।
3. उपवन = बगिया, देश = वतन,

   मित्र = सखा, दिन = दिवस,

   संसार = दुनिया, समुद्र = सागर
4. (क) बच्चों ने बड़े <u>**उत्साह**</u> से दीपावली का त्योहार मनाया।

   (ख) सच्ची <u>**लगन**</u> से इंसान अपना लक्ष्य प्राप्त कर सकता है।

(ग) जादूगर ने अपने **जादू** से सबको हैरान कर दिया।

(घ) लता मंगेशकर की **आवाज** बहुत सुरीली थी।

- **कल्पना आधारित**

1. संगीत के क्षेत्र में प्रसिद्ध होने के लिए, निरंतर रियाज (अभ्यास), पेशेवर प्रशिक्षण और नेटवर्किंग सबसे महत्त्वपूर्ण है। आपको अपनी गायकी/वादन शैली को निखारना, संगीत के सिद्धान्तों को समझना, सोशल मीडिया पर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर और पेशेवरों के साथ संबंध बनाकर अवसर तलाशने होंगे।

   इन तैयारियों के साथ, धैर्य और दृढ़ता से हम संगीत की दुनिया में अपनी पहचान बना सकते हैं।

2. किसी संगीतकार के साक्षात्कार में उनकी प्रेरणा, रचनात्मक प्रक्रिया और कैरियर के उतार-चढ़ाव पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। मुख्य प्रश्न उनके शुरुआती दिनों, संगीत शैली, यादगार प्रदर्शन और आने वाली परियोजनाओं के बारे में होंगे। यह संवाद उनके व्यक्तिगत सफर और कला के प्रति समर्पण को उजागर करेगा।

साक्षात्कार के लिए संभावित प्रश्न

1. संगीत की दुनिया में आने की प्रेरणा आपको कहाँ से मिली?
2. आपका पहला गायन अनुभव कैसा था?
3. क्या संगीत आपकी पारिवारिक विरासत है या आपने खुद इसे चुना?
4. आपके गीतों की रचना प्रक्रिया क्या है? क्या पहले शब्द आते हैं या धुन?
5. क्या किसी रचना को पूरा करने में आपको किसी विशेष चुनौती का सामना करना पड़ता है?
6. अब तक का सबसे यादगार लाइव प्रदर्शन कौन-सा रहा है और क्यों?
7. आप अपने संगीत को किन शब्दों में परिभाषित करेंगे?
8. नये उभरते कलाकारों को आप क्या सलाह देंगे?

इन प्रश्नों से संगीतकार के व्यक्तित्व और उनके कलात्मक दृष्टिकोण की एक गहरी तस्वीर सामने आएगी।

- **खेल आधारित**

  वीणा, शहनाई, बाँसुरी, ढोलक, तबला, हारमोनियम।

9. विजयी विश्व तिरंगा प्यारा

अभ्यास

उच्चारण आधारित

- **शुद्ध लिखो और बोलो–** मातृभूमि, तिरंगा, स्वतंत्रता, हरषाने, अविचल।

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. हमारा तिरंगा सदैव शक्ति बरसाने वाला है।
2. सभी भारतीयों का ध्येय देश की स्वतंत्रता और अखंडता को बनाए रखना है।
3. हम तिरंगे और अपने तिरंगे की जय-जयकार बोलनी चाहिए।
4. हमें भारत माता और तिरंगे की जय-जयकार बोलनी चाहिए।
5. भारत देश बहुत महान, निराला और प्यारा है।

- **लिखित**

1. हमारा तिरंगा झंडा सुख और शांति का अमृत (सुधा) सरसाने वाला है।
2. गीत में स्वतंत्रता के भीषण संग्राम (रण) की बात कही गयी है।
3. गीत में अपनी मातृभूमि और देश के मान-सम्मान के लिए तिरंगे पर बलि होने की बात कही है।
4. एक साथ मिलकर 'विजयी विश्व तिरंगा प्यारा, झंडा ऊँचा रहे हमारा' गीत गाने के लिए कहा जा रहा है।
5. हमरा प्रण विश्व विजय प्राप्त कर लेने (देश का गौरव पूरी दुनिया में बढ़ाने) के बाद पूर्ण होगा।

अपनी समझ-से

- **सही विकल्प–**

1. (ख), 2. (क), 3. (क), 4. (ख)।

सोच-समझकर

1. ध्वजारोहण एक गौरवपूर्ण क्षण होता है, इस दौरान हमें निम्नलिखित बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए–

(क) ध्वज को हमेशा सम्मानपूर्वक और आदर के साथ फहराना चाहिए।

(ख) जब ध्वज फहराया जा रहा हो या राष्ट्रगान बज रहा हो, तब हमें 'सावधान' की मुद्रा में सीधे खड़े होना चाहिए।

(ग) यह सुनिश्चित करना चाहिए कि केसरिया रंग हमेशा ऊपर की ओर रहे। झंडा कहीं फटा या गंदा नहीं होना चाहिए।

(घ) ध्वजारोहण के समय आपस में बातचीत नहीं करनी चाहिए और न ही इधर-उधर घूमना चाहिए।

2. भारतीय तिरंगे के तीन रंग हमारे देश के मूल्यों को दर्शाते हैं–

(क) **केसरिया**–यह रंग शक्ति, साहस और देश के लिए किए गए बलिदान का प्रतीक है।

(ख) **सफेद**–यह शांति, सत्य और पवित्रा का संदेश देता है।

(ग) **हरा**–यह रंग खुशहाली, हरियाली, उर्वरता और समृद्धि का प्रतीक है। झंडे के बीच में स्थित नीला 'धर्म चक्र' न्याय और निरंतर प्रगति का प्रतीक है।

- **पंक्तियों का भाव**

1. इसका भाव यह है कि हमारे देश का तिरंगा झंडा सदैव गौरव और सम्मान के साथ आसमान में लहराता रहे। यह हमारे राष्ट्र की शान और स्वाभिमान का प्रतीक है।
2. इसका अर्थ है कि हमारे देश की शक्ति और एकता को देखकर दुश्मनों के मन में डर पैदा हो जाए। वे हमारे देश की ओर बुरी नजर डालने का साहस न कर सकें।
3. इन पंक्तियों का भाव है कि हमारी आजादी ही हमारा मुख्य लक्ष्य और उद्देश्य है। हम अपनी स्वतंत्रता की रक्षा के लिए हमेशा समर्पित रहेंगे।
4. इसका अर्थ है कि हम अपने साहस, सच्चाई और ऊँचे आदर्शों के बल पर पूरे विश्व में अपनी जीत का परचम लहराएँ और दुनिया को अपनी महानता दिखाएँ।

- **रिक्त स्थान**

1. शक्ति, 2. मातृभूमि,
3. संकट, 4. देश-धर्म,
5. जान।

पाठ से आगे

- **मन के विचार**

1. देश का नाम रोशन करने के लिए हम निम्नलिखित कार्य कर सकते हैं–

(क) **अच्छी शिक्षा प्राप्त करना**–मन लगाकर पढ़ाई करेंगे ताकि भविष्य में एक जिम्मेदार और काबिल नागरिक बनकर देश की उन्नति में योगदान दे सकें।

(ख) **अनुशासन और ईमानदारी**–अपने हर कार्य को पूरी ईमानदारी और अनुशासन के साथ करेंगे।

(ग) **सामाजिक सेवा**–गरीबों और जरूरत मंदों की सहायता करेंगे और समाज में भाईचारा फैलाएँगे।

2. (क) यदि मुझे सैनिक बनने का अवसर मिला, तो मैं पूरी बहादुरी और अनुशासन के साथ सीमाओं की रक्षा करूँगा।

(ख) कठिन परिस्थितियों में भी अपना धैर्य नहीं खोऊँगा और देश की अखंडता के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करने को तैयार रहूँगा।

(ग) मैं एक ईमानदार और कर्तव्यनिष्ठ सिपाही बनकर देशवासियों की सुरक्षा सुनिश्चित करूँगा।

भाषा-आधारित

- **पर्यायवाची शब्द**

झंडा–ध्वज, पताका, केतु

विश्व–संसार, जग, जगत

सुधा–अमृत, पीयूष, सोम

शान–प्रतिष्ठा, गौरव, वैभव

शत्रु–दुश्मन, वैरी, विपक्षी।

- **अनेक शब्द के लिए एक शब्द**

भारतीय, विश्व विजेता, सैनिक, तिरंगा, सहपाठी।

कल्पना आधारित

1. यदि हम भारतवासी स्वतंत्रता के लिए एकजुट न होते, तो अंग्रेजी सरकार हमें लंबे समय तक अपना गुलाम बनाकर रखती। वे हमारी संपदा और संसाधनों का शोषण जारी रखते और अपनी 'फूट डालो और राज करो' की नीति से हमें आपस में और अधिक बाँट देते। बिना एकता के, हमें आपस में और अधिक बाँट देते। बिना एकता के, हमें कभी भी वह आजादी और सम्मान नहीं मिलता जो आज हमारे पास है।
2. यदि हम धर्म और संप्रदाय के नाम पर आपस में लड़ते रहेंगे, तो हमारे देश की एकता और अखंडता खतरे में पड़ जाएगी। आपसी फूट का फायदा बाहरी शक्तियाँ उठा सकती हैं, जिससे देश फिर से कमजोर हो सकता है। इसलिए, देश के विकास के लिए आपसी भाईचारा और सद्भाव बहुत जरूरी है।

खेल आधारित

- **बुद्धि-परीक्षण**

  छात्र अध्यापक की सहायता से स्वयं करें।

10. एलबम

अभ्यास

उच्चारण आधारित

- **शुद्ध लिखो और बोलो–**

  बरछियाँ, प्रकाश, विज्ञापन, प्रतीक्षा, ब्राह्मण, भगवद्गीता

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. पंडित शादीराम दिल के बुरे न थे।
2. पंडित शादीराम को लाला सदानंद के पाँच रुपये चुकाने थे।
3. पत्रिकाएँ पंडित शादीराम के बड़े भाई मँगवाते थे।
4. पंडित शादीराम को चित्रों के विषय में यह आशा न थी कि कोयला की खान में हीरा मिल जाएगा।
5. पंडित शादीराम रोगी लाला सदानंद को भगवद्गीता सुना रहे थे।

- **लिखित**

1. पंडित शादीराम, लाला सदानंद के विषय में सोचा करते थे कि लाला कैसे भलेमानस हैं, जो अपनी रकम के बारे में मुझसे बात तक नहीं करते।
2. लाला सदानंद ने पंडित शादीराम के घर की अलमारी में अनेक बंगला, हिंदी और अंग्रेजी की मासिक पत्रिकाएँ देखीं।
3. सुंदर और रंगीन चित्रों को देखकर लाला सदानंद बोले, "ये चित्रकला के बढ़िया नमूने हैं। अगर किसी जरूरतमंद शौकीन को पसंद आ जाएँ, तो आप हजार-दो हजार रुपये बड़ी आसानी से कमा सकते हैं।
4. लाल सदानंद ने चित्रों को एलबम में लगवा-कर, पता सहित विज्ञापन दे दिया।
5. पंडित शादीराम, लाला सदानंद को अन्त में, उन्हें पहले से भी अधिक सज्जन, अधिक उपकारी और ऊँचा समझने लगे थे।

- **प्रत्यास्मरण**

1. पंडित जी की नजर में लाला सदानंद सज्जन व्यक्ति थे।
2. पंडित जी से लाला सदानंद ने आशीर्वाद लिया।
3. पंडित जी को पहली बार कर्ज चुकाने की खुशी का अनुभव हुआ।
4. लाल सदानंद को पंडित जी ने आशीर्वाद दिया कि, "परमात्मा आपको चिरंजीवी रखे।"

- **अपनी समझ से**

1. (क) मोहर के
2. (ख) चार
3. (घ) ये सभी
4. (ग) 1000
5. (घ) भगवद्गीता

- **सोच-समझकर**

1. समाज में आज सच्चाई और ईमानदारी जीवित है, क्योंकि यह मानवीय संबंधों, विश्वास और नैतिक मूल्यों की आधारशिला है। यद्यपि भ्रष्टाचार की खबरें सामने आती हैं, लेकिन निस्वार्थ सेवा करने वाले आम लोग, ईमानदार सैनिक, कर्तव्यनिष्ठ शिक्षक और अपनी गलतियों को स्वीकार करने वाले नागरिक ही इस समाज को सही रास्ते पर थामे हुए हैं।
   सच्चाई कोई दुर्लभ वस्तु नहीं, बल्कि रोजमर्रा के छोटे-छोटे फैसलों (जैसे– रिश्वत न देना, सच बोलना) के रूप में हमारे बीच मौजूद है जो रिश्तों को मजबूत बनाता है।
2. लाला सदानंद एक अत्यन्त उदार, दयालु और परोपकारी व्यक्ति हैं, जो दूसरों के आत्म-सम्मान को ठेस पहुँचाए बिना गुप्त रूप से मदद करते हैं। उनके जैसे व्यक्तित्व का उदाहरण 'हार की जीत' कहानी के बाबा भारती हैं, जो डाकू खड्ग सिंह को भी अपनी नैतिकता से बदल देते हैं, वैसे ही जैसे सदानंद ने पंडित शादीराम की मदद की। ऐसा ही एक अन्य उदाहरण मुंशी प्रेमचंद की कहानी 'ईदगाह' में हामिद का बालपन के बावजूद समझदार और परोपकारी होना भी सदानंद की तरह दूसरों की भावनाओं को समझने का एक उदाहरण है। ये पात्र नि:स्वार्थ भाव से दूसरों की मदद करने वाले सज्जन व्यक्ति हैं।

- **पंक्तियों पर चर्चा**

	किसने कहा	**किससे कहा**
1.	पंडित शादीराम ने	लाला सदानंद से
2.	लाला सदानंद ने	पंडित शादीराम से
3.	लाला सदानंद ने	पंडित शादीराम से
4.	लाला सदानंद ने	पंडित शादीराम से
5.	लाला सदानंद ने	पंडित शादीराम से

- **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. विवशता
2. बच्चों
3. परमात्मा
4. बेसुध
5. होश

- **सही-गलत**

1. (✗), 2. (✓), 3. (✓), 4. (✓), 5. (✓)।

- **पाठ से आगे (मन के विचार)**

1. एलबम के अलावा स्मृतियों को सँजोने के लिए डिजिटल स्टोरेज (गूगल फोटोज, पेन ड्राइव), स्क्रैप बुक, डायरी लेखन, वीडियो लॉग बनाना, पुरानी वस्तुओं को सहेजकर रखना और यादों के बक्से जैसे रचनात्मक तरीके बेहतरीन विकल्प हैं। ये माध्यम यादों को जीवित रखते हैं।
   इन तरीकों से आप अपनी अनमोल यादों को हमेशा के लिए सुरक्षित रख सकते हैं।
2. रिश्ता और धन दोनों जीवन के लिए आवश्यक हैं, लेकिन मानवीय खुशी और भावनात्मक सुरक्षा के लिए रिश्ते अधिक महत्त्वपूर्ण माने जाते हैं। धन केवल भौतिक सुख और स्थिरता प्रदान करता है, जबकि रिश्ते कठिन समय में भावनात्मक सहारा, प्यार और मानसिक शांति देते हैं, जो धन से नहीं खरीदे जा सकते।
   धन साधन हो सकता है, लेकिन रिश्ते जीवन का उद्देश्य हैं। अत्यधिक धन होने पर भी अकेलेपन में खुशी नहीं मिल सकती, जबकि मजबूत रिश्तों के साथ कम धन में भी संतुष्ट रहा जा सकता है।

- **भाषा आधारित**

1. एकैक, तथैव, जलौध, महौषध
2. माता और पिता, पाप और पुण्य, दाल और रोटी, अन्न और जल, राम और लखन
3. स्वस्थ, दुखी, अप्रसन्न, बुरी, असफलता, बेचना

- **कल्पना आधारित**

1. यदि मेरे किसी सहपाठी को आर्थिक तंगी के कारण उच्च शिक्षा में कठिनाई आती है तो मैं नैतिक समर्थन देने के साथ-साथ छात्रवृत्ति खोजने, स्कूल/कॉलेज प्रशासन से बात करके फीस कम करने, पुराने नोट्स-किताबें साझा करने और छोटे-मोटे पार्ट-टाइम जॉब्स या क्राउडफंडिंग के माध्यम से धन जुटाने में उसकी मदद करूँगा।

मेरा उद्देश्य यह सुनिश्चित करना होगा कि किसी भी प्रतिभाशाली छात्र की शिक्षा धन के अभाव में न रुके।

2. किसी आर्थिक मदद करने से पहले उसकी ईमानदारी, वास्तविक आवश्यकता, मेहनत करने की इच्छा और आत्मनिर्भर बनने का लक्ष्य देखना सबसे महत्त्वपूर्ण है। मदद ऐसी हो जो उन्हें सशक्त बनाए, न कि केवल निर्भर। सही व्यक्ति की पहचान के लिए उनकी साख और स्थिति की सच्चाई जाँचना आवश्यक है।

मदद करने के तरीके– (i) सीधे नगद के बजाय फीस, इलाज का बिल या सीधे कच्चा माल (जैसे–सब्जी या सिलाई मशीन) प्रदान करें, ताकि पैसे का सदुपयोग हो। (ii) सम्मानजनक तरीका – मदद इस तरह करें कि उसे अपनी गरीबी पर शर्मिंदगी न महसूस हो, बल्कि उसे गरिमा महसूस हो।

- **खेल आधारित**

1. अध्यापक की सहायता से छात्र स्वयं करें।

(बुद्धि परीक्षण)

1. ओणम
2. भैया दूज
3. ईद
4. पोंगल
5. नवरात्र
6. दीपावली

11. लोक संस्कृति

अभ्यास

उच्चारण आधारित

- **शुद्ध लिखो और बोलो–**

श्रृंगार, संस्कृति, मुश्किल, मोतियों, सम्मोहित, शानदार।

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. पाठ में हिमाचल प्रदेश की लोक संस्कृति का वर्णन किया गया है।
2. हिमाचल प्रदेश का किन्नौर जिला अपनी परंपराओं एवं लोक संस्कृति के लिए जाना जाता है।
3. माथे पर बाँधे जाने वाले पट्टे को 'तोनोल' कहते हैं।
4. किन्नौर का मुख्य लोक नृत्य 'कयांग' के नाम से जाना जाता है।
5. महिलायें पैरों की उँगलियों में 'बांगपोल' गहना पहनती हैं।

- **लिखित**

1. हिमाचल प्रदेश सिर्फ अपने पर्यटन के लिए नहीं, बल्कि अपनी अनूठी लोक-संस्कृति के लिए भी दुनिया भर में प्रसिद्ध है।
2. ऊपरी किन्नौर की सीमा रिकांगपियो से सुमरा तक जाती है।
3. लोक-संस्कृति किसी विशेष क्षेत्र या समुदाय के लोगों की पारंपरिक रीति-रिवाज को कहते हैं।
4. किन्नौरी पारंपरिक परिधान में शामिल रहती है– किन्नौरी टोपी, शॉल, दोहडू, गाची और चोली (मखमल की हरी जैकेट)।
5. किन्नौर का प्रमुख त्योहार 'फुल्याच' महोत्सव है, जो प्रकृति परंपरा और प्रेम का प्रतीक है।

- **प्रत्यास्मरण**

1. ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों से घिरा किन्नौर दो भागों में बँटा हुआ है- निचला किन्नौर और ऊपरी किन्नौर।
2. हिमाचल प्रदेश सिर्फ अपने पर्यटन के लिए नहीं, बल्कि अपनी अनूठी लोक संस्कृति के लिए दुनिया भर में प्रसिद्ध है।
3. किन्नौर क्षेत्र की महिलाओं का पारंपरिक श्रृंगार सबको हैरत में डाल देता है।
4. किन्नौर अपनी लोक संस्कृति तथा परंपराओं के लिए जाना जाता है।

- **अपनी समझ से**

1. (घ) लोक संस्कृति का
2. (क) दो
3. (ख) चाँदी की
4. (क) माला
5. (क) कान में

- **सोच-समझकर**

1. हिमाचल प्रदेश में गले में चंद्रहार (पारंपरिक हार) पहने महिला को देखकर लोगों के मुँह से वाह-वाह इसलिए निकलती है क्योंकि यह हार न केवल बेहद खूबसूरत और आकर्षक होता है, बल्कि यह हिमाचल की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, कला और पारंपरिक पहनावे का एक जीवंत प्रतीक भी है। यह हार सिर से पाँव तक सजे पारंपरिक लिबास को संपूर्णता देता है।
2. हिमाचल प्रदेश की संस्कृति की एक आकर्षक विशेषता यहाँ लगातार आयोजित होने वाले मेले और त्योहार हैं, जिनमें होली, दशहरा और दीवाली के साथ-साथ कई स्थानीय त्यौहार भी शामिल हैं, जिन्हें बड़े उत्साह से मनाया जाता है। राज्य के सांस्कृतिक विकास में मंदिर वास्तुकला ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

   हिमाचल प्रदेश अपने हिमालयी परिदृश्यों और लोकप्रिय हिल स्टेशनों के लिए प्रसिद्ध है। रॉक क्लाइम्बिंग, माउंटेन बाइकिंग, पैराग्लाइडिंग, आइस स्केटिंग और हेली स्कीइंग जैसी कई आउटडोर गतिविधियाँ हिमाचल प्रदेश में पर्यटकों के बीच लोकप्रिय हैं। राज्य की राजधानी शिमला पर्यटकों के बीच लोकप्रिय है।

   पूरा राज्य पत्थर और लकड़ी के बने मंदिरों से सुशोभित है। समृद्ध संस्कृति और परंपराओं ने हिमाचल को अद्वितीय बना दिया है। छायादार घाटियाँ, ऊबड़-खाबड़ चट्टानें, हिमनदियाँ, विशाल चीड़ के पेड़, गर्जना करती नदियाँ और मनमोहक वनस्पति और जीव-जंतु मिलकर हिमाचल की एक ऐसी मधुर ध्वनि रचते हैं जो सदा के लिए यादगार बन जाते हैं।

   इन सब बातों ने देश में ही नहीं, विदेशी पर्यटकों को भी अपनी ओर आकर्षित किया है। यही सब कारण है कि हिमाचल प्रदेश दुनिया भर में प्रसिद्ध है।

- **सही-गलत**

  1. (✓), 2. (✗), 3. (✓), 4. (✓), 5. (✓)।

- **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. चेहरा　　2. 'चाक'
3. सौंगना　　5. गाची
4. गले

- **पाठ से आगे (मन के विचार)**

1. किसी भी समाज में संस्कृति एक आधारभूत स्तंभ है, जो पहचान, सामाजिक सामंजस्य और मूल्यों के हस्तांतरण के माध्यम से जीवन को अर्थ प्रदान करती है। यह सामाजिक सामंजस्य को बढ़ावा देती है, सामूहिक व्यवहार को अनुशासित करती है और ज्ञान को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाकर समाज को निरंतरता और पहचान प्रदान करती है।
2. किसी क्षेत्र या समाज को विशिष्ट पहचान बनाने के लिए अपनी संस्कृति, भाषा और परंपराओं का संरक्षण करने के साथ-साथ नवाचार, शिक्षा और सामूहिक सामाजिक सेवा में संलग्न होना पड़ता है। यह पहचान साझा मूल्यों, विशिष्ट कला, शिल्प, नैतिकता और सामाजिक समानता को बढ़ावा देकर ही स्थापित की जा सकती है, जिससे वह दूसरों के लिए प्रेरणा बने।

- **भाषा आधारित**

1. **उपसर्ग लगाकर नया शब्द—**

शब्द	**उपसर्ग**	**नया शब्द**
अधिक	अति	अत्यधिक
थाह	अ	अथाह
पति	अधि	अधिपति
शासन	अनु	अनुशासन
मान	अभि	अभिमान

2. **प्रत्यय लगाकर नया शब्द**

शब्द	**प्रत्यय**	**नया शब्द**
अखबार	वाला	अखबारवाला
आदम	ई	आदमी
खेल	आड़ी	खिलाड़ी
सप्ताह	इक	साप्ताहिक
सड़ना	इयल	सड़ियल

- **कल्पना आधारित**

1. आभूषणों के बिना महिलाओं का शृंगार सादगीपूर्ण, प्राकृतिक और नैसर्गिक सुदंरता को उभारने वाला लगता है। जहाँ आभूषण बाहरी चमक-दमक बढ़ाते हैं, वहीं उनके बिना भी सुहाग के प्रतीक (बिंदी, सिंदूर), मेंहदी, अच्छी वेशभूषा और चेहरे पर मुस्कान के साथ सौंदर्यपूर्ण हो सकता है। यह सादगी,

आत्मविश्वास और शालीनता को दर्शाती है।

2. अपनी सांस्कृतिक धरोहर सुरक्षित रखने के लिए हमें ऐतिहासिक स्थलों की सफाई व संरक्षण, पारंपरिक कलाओं को बढ़ावा, युवा पीढ़ी में जागरूकता और स्थानीय विरासत के प्रति सम्मान (जैसे-स्मारकों पर न लिखना) अपनाना चाहिए। जिम्मेदार पर्यटन, कानूनी संरक्षण का समर्थन और डिजिटल माध्यमों से परंपराओं का दस्तावेजीकरण करना भी महत्त्वपूर्ण है।

- **खेल आधारित (बुद्धि परीक्षण)**

आठ प्रकार के फल-मेवों के नाम

1. अखरोट,
2. बादाम,
3. खजूर,
4. आलूबुखारा,
5. तरबूज,
6. संतरा,
7. आम,
8. केला

12. योग और हमारा स्वास्थ्य

अभ्यास

उच्चारण आधारित

- **शुद्ध लिखो और बोलो–** स्वास्थ्य, कबड्डी, मांसपेशियाँ, किशोरावस्था, दृश्य, विकास।

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. स्वास्थ्य ही जीवन का सबसे बड़ा धन है।
2. अंगों की ऐच्छिक गति मांसपेशियों के द्वारा होती है।
3. नियमित व्यायाम करने से मांसपेशियाँ लंबे समय तक (या युवावस्था तक) लचीली बनी रहती हैं।
4. बच्चों द्वारा एक साथ व्यायाम करने का दृश्य बहुत ही मनमोहक, सुंदर और अनुशासित होता है।
5. गाँधी जी का मानना था कि पूरी तरह पेट भरकर खाने के बजाय थोड़ा भूखा रहना स्वास्थ्य के लिए अधिक लाभकारी होता है।

- **लिखित**

1. जीवन को सुंदर और स्वस्थ बनाने के लिए संतुलित आहार, नियमित व्यायाम, शुद्ध हवा और पानी, पर्याप्त नींद तथा सकारात्मक सोच मुख्य साधन हैं।
2. शरीर में हृदय का मुख्य कार्य पूरे शरीर में रक्त (खून) को पंप करना है। यह शरीर के सभी अंगों तक ऑक्सीजन और आवश्यक पोषक तत्व पहुँचाने में मदद करता है।
3. किशोरावस्था के लिए दौड़ना, तैरना, साइकिल चलाना, रस्सी कूदना और विभिन्न मैदानी खेल (जैसे–फुटबॉल, बास्केटबॉल) बहुत लाभदायक होते हैं।
4. बड़े बच्चों के प्रमुख खेलों में क्रिकेट, फुटबॉल, हॉकी, बॉलीबॉल, बैडमिंटन और कबड्डी शामिल है।
5. योगासन हमारे शरीर को लचीला और फुर्तीला बनाते हैं। ये मानसिक शांति प्रदान करते हैं और एकाग्रता बढ़ाने के साथ-साथ कई बीमारियों से हमारी रक्षा भी करते हैं।

अपनी समझ-से

- **सही विकल्प**

1. (घ)
2. (घ)
3. (घ)
4. (घ)
5. (क)

- **सोच-समझकर**

1. बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए खेलकूद, व्यायाम और आसन बहुत आवश्यक हैं। इनसे शरीर मजबूत और लचीला बनता है, जिससे रोगों से लड़ने की शक्ति बढ़ती है। साथ ही, ये गतिविधियाँ मानसिक एकाग्रता बढ़ाती हैं और बच्चों में अनुशासन, धैर्य तथा सामूहिक कार्य (टीम वर्क) जैसी अच्छी भावनाएँ विकसित करने में मदद करती हैं।
2. तैरना एक संपूर्ण व्यायाम है क्योंकि इसमें शरीर के अंगों और सभी मांसपेशियों का एक साथ उपयोग होता है। यह हृदय की कार्यक्षमता को बढ़ाता है और फेफड़ों को मजबूत बनाता है। तैरने से शरीर में लचीलापन आ जाता है, अतिरिक्त कैलोरी जलती है और यह मानसिक तनाव को कम करके शरीर को स्फूर्ति और ताजगी प्रदान करता है।

पंक्तियों पर चर्चा

- **पंक्ति का अर्थ**

1. इसका तात्पर्य है कि अच्छा स्वास्थ्य किसी भी कीमती वस्तु या पैसे से बढ़कर है। यदि हमारा शरीर स्वस्थ है, तभी हम जीवन की खुशियों और सुख-सुविधाओं का आनंद ले सकते हैं।
2. खेल के माध्यम से बच्चे टीम में काम कना और दूसरों का सम्मान करना सीखते हैं, तो उनमें देशभक्ति की भावना, प्रेम और एकजुट होकर रहने की भावना पैदा होती है, जो राष्ट्र को मजबूत बनाती है।
3. जिस तरह दौड़ना या फुटबॉल खेलना एक व्यायाम और खेल है, उसी तरह तैरना भी एक पूर्ण शारीरिक व्यायाम और मनोरंजन का साधन है।
4. हमें अपनी भूख और पाचन शक्ति के अनुसार ही भोजन करना चाहिए। जरूरत से ज्यादा खाना स्वास्थ्य को बिगाड़ सकता है।

- **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. मन,
2. फेफड़े,
3. हड्डियाँ,
4. मेल या जोड़,
5. भोजन।

- **पाठ से आगे**

1. हृदय हमारे शरीर का सबसे मुख्य अंग है जो एक पंप की तरह कार्य करता है।
   (क) **रक्त संचार**–यदि हृदय नहीं होगा, तो शरीर में खून का संचार रुक जाएगा। रक्त ही हमारे अंगों तक ऑक्सीजन और पोषण पहुँचाता है।
   (ख) **जीवन का आधार**–बिना पंपिंग के शरीर के अंगों को ऊर्जा नहीं मिलेगी और वे काम करना बंद कर देंगे। सरल शब्दों में, हृदय के बिना मनुष्य का जीवित रहना असंभव है। यह हमारे शरीर का वह 'इंजन' है जो जन्म से मृत्यु तक निरंतर चलता रहता है।
2. **व्यायाम और आसन न करने के दुष्प्रभाव**– आज की जीवन शैली में शारीरिक गतिविधि बहुत जरूरी है। यदि हम व्यायाम या योगासन नहीं करते है, तो इसके गंभीर परिणाम हो सकते हैं–
   (क) **शारीरिक कमजोर और आलस्य**– शरीर जल्दी थकने लगता है और हमेशा भारीपन महसूस होता है।
   (ख) **लचीलेपन की कमी**–आसन न करने से हमारी मांसपेशियाँ और जोड़ों में अकड़न आ जाती है, जिससे भविष्य गठिया या पीठ दर्द जैसी समस्याएँ हो सकती हैं।
   (ग) **बीमारियों का खतरा**–नियमित व्यायाम की कमी से मोटापा, मधुमेह और हृदय संबंधी रोगों का खतरा काफी बढ़ जाता है।
   (घ) **मानसिक प्रभाव**–योगासन न केवल शरीर बल्कि मन को शांत रखते हैं। इन्हें न करने से तनाव और चिड़चिड़ापन बढ़ जाता है।

- **भाषा आधारित**

  चढ़ावा, तैराक, डरावना, मरियल, लुटेरा, जमींदार, खटाई, चिकनाहट, चचेरा, भूखा।

- **कल्पना आधारित**

1. यदि समाज से जाति और संप्रदाय का भेदभाव पूरी तरह समाप्त हो जाए, तो हमारा देश निम्नलिखित क्षेत्रों में अभूतपूर्व उन्नति कर सकता है–
   (क) **सामाजिक एकता**–समाज में नफरत और दंगों की जगह प्रेम और भाईचारा स्थान लेगा, जिससे देश की आंतरिक सुरक्षा मजबूत होगी।
   (ख) **प्रतिभा सम्पन्न**–लोगों का मूल्यांकन उनके जन्म या जाति के बजाय उनकी योग्यता और कौशल के आधार पर होगा, जिससे देश को हर क्षेत्र में बेहतरीन नेतृत्व मिलेगा।
   (ग) **आर्थिक समृद्धि**–भेदभाव के कारण होने वाले संसाधनों के नुकसान में कमी आएगी और पूरा देश मिलकर गरीबी की दिशा में काम कर सकेगा।
   (घ) **विश्व गुरु की छवि**–भारत पूरी दुनिया के सामने 'विविधता में एकता' का एक वास्तविक और प्रेरणादायक उदाहरण पेश कर पाएगा।
2. योगबल का अर्थ केवल शारीरिक व्यायाम

नहीं, बल्कि शरीर, मन और आत्मा का संतुलन है। इसके माध्यम से निम्नलिखित बातें संभव हैं–

(क) **रोगमुक्त जीवन**–योगबल से शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है, जिससे कठिन बीमारियों पर विजय पाई जा सकती है।

(ख) **मानसिक शांति और एकाग्रता**–यह तनाव को दूर कर मन को स्थिर करता है, जिससे विद्यार्थियों और कर्मठ लोगों की कार्यक्षमता कई गुना बढ़ जाती है।

(ग) **इंद्रियों पर नियंत्रण**–योग के माध्यम से व्यक्ति अपने क्रोधा, लालच और अन्य बुराईयों पर काबू पाना सीख सकता है।

(घ) **आध्यात्मिक जागृति**–योगबल से व्यक्ति अपने भीतर की असीम ऊर्जा को पहचानकर आत्मिक शांति और उच्च चेतना प्राप्त कर सकता है।

खेल आधारित

- **पहेलियों के उत्तर**–ताड़सन, उत्कटासन।

13. कोशिश करने वालों की हार नहीं होती

उच्चारण आधारित

- **शुद्ध बोलो और लिखो–**

  कोशिश, विश्वास, डुबकियाँ, हैरानी, चुनौती, मैदान

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. लहरों से डरकर नौका पार नहीं हो सकती।
2. मन का विश्वास रगों में साहस भरता है।
3. गिरकर चढ़ना विश्वास रखने वालों को नहीं अखरता है।
4. गहरे पानी में सहजता से मोती प्राप्त नहीं होता है।
5. चुनौती असफलता को कहा गया है।

- **लिखित**

1. कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।
2. डुबकियाँ गोताखोर सिंधु (समुद्र) में लगाता है।
3. आखिर विश्वास रखने वाले की मेहनत बेकार नहीं होती है।
4. नींद-चैन को सफल न होने तक त्यागने के लिए कहा गया है।
5. संघर्ष का मैदान छोड़कर न भागने के लिए कहा गया है।

- **प्रत्यास्मरण**

संदर्भ एवं प्रसंग– यह पंक्तियाँ सोहनलाल द्विवेदी की कविता 'कोशिश करने वालों की हार नहीं होती' से ली गई हैं, जिसमें उन्होंने लोगों को असफलता से निराश न होने और लगातार संघर्ष करने की प्रेरणा दी है।

व्याख्या– द्विवेदी जी ने कहा है कि असफलता को हार मानकर निराश होने के बजाय, इसे एक चुनौती के रूप में स्वीकार करें। यह आपको अपनी कमियों को खोजने और सुधारने का मौका देती है। विश्लेषण करें कि किस गलती या कमी के कारण असफलता मिली और उस कमी को सुधारकर पुनः प्रयास करें। जब तक अंतिम लक्ष्य (सफलता) प्राप्त न हो जाए, तब तक आराम न करें। सफलता के लिए कड़ी मेहनत और समर्पण अनिवार्य है। कठिनाइयों से डरकर या हार मानकर अपने कर्मक्षेत्र (मैदान) को न छोड़ें, बल्कि उसका डटकर सामना करें। बिना कुछ किए, बिना मेहनत किए कोई सफल नहीं होता। जो व्यक्ति निरंतर प्रयास और कोशिश करता है, अंततः सफलता उसे ही मिलती है।

- **अपनी समझ से**

1. (ख) कोशिश करने वालों की
2. (क) साहस
3. (ग) गोताखोर
4. (क) दोगुना
5. (ग) जय-जयकार

- **सोच-समझकर**

1. परिश्रमशील व्यक्ति मेहनत और लगन से भाग्य का निर्माता स्वयं बनकर कठिन से कठिन लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। वह न केवल आत्मनिर्भर और आत्मविश्वासी बनता है, बल्कि अपनी मेहनत से सफलता, सुख-समृद्धि और समाज में सम्मानजनक स्थान हासिल करता है। ऐसा व्यक्ति असंभव

को भी संभव बना सकता है और दूसरों के लिए प्रेरणा बनता है।

2. कार्य में सफलता न मिलने पर हताश होने के बजाय, आपको अपनी रणनीति का पुनर्मूल्यांकन करना चाहिए। मुख्य रूप से अपने लक्ष्य की स्पष्टत: जाँच करें, कार्य योजना में सुधार करें, लगातार मेहनत जारी रखें और धैर्य न खोएँ। अपनी असफलताओं से सीखें और अपनी कार्यक्षमता बढ़ाने के लिए सकारात्मक मानसिकता बनाए रखें।

- **भाव चर्चा**

1. **भाव–** पंक्ति में यह बताया गया है कि प्रयास करने वालों की कभी हार नहीं होती और मन का विश्वास व्यक्ति को साहस देता है। असफलता के कारणों और गोताखोरों के कार्य को समझना भी महत्त्वपूर्ण है।

2. यह पंक्ति 'कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती' कविता (सोहनलाल द्विवेदी) से है। इसका भाव है कि निरंतर प्रयास करने वालों को बार-बार असफलता (चढ़कर गिरना) और फिर प्रयास करना (गिरकर चढ़ना) कष्ट या निराशा नहीं देता है, बल्कि उनका आत्मविश्वास बढ़ाता है, क्योंकि उन्हें विश्वास होता है कि मेहनत अंतत: सफलता लायेगी।

3. "मिलते नहीं सहज ही मोती गहरे पानी में।" पंक्ति का भाव यह है कि जीवन में बहुमूल्य सफलताएँ या उपलब्धियाँ (मोती) बिना कठिन संघर्ष या मेहनत के आसानी (सहज) से प्राप्त नहीं होतीं। जिस प्रकार कीमती मोती पाने के लिए गोताखोर को समुद्र की गहराई में जाना पड़ता है, वैसे ही सफलता के लिए संघर्ष रूपी 'गहरे पानी' में मेहनत करनी पड़ती है।

इस पंक्ति में कहा गया है कि उत्तम फल या सफलता पाने के लिए गहराई में उतरना, यानी कड़ी मेहनत करना अनिवार्य है। यह जीवन की चुनौतियों से न डरने और निडर होकर लक्ष्यों का पीछा करने के लिए प्रेरित करती है, ठीक वैसे ही जैसे एक गोताखोर मोती पाने के लिए समुद्र की गहराई से नहीं डरता।

4. "मुट्ठी उसकी हर बार खाली नहीं होती।" यह पंक्ति गोताखोरों (मेहनतकशों) के लिए कही गई है। इस पंक्ति में कवि ने कहा है कि समुद्र में मोती खोजना आसान नहीं है। परंतु एक गोताखोर में अदम्य साहस और उत्साह भरा होता है। वह बार-बार डुबकियाँ लगाता है और उसे कई बार खाली हाथ आना पड़ता है लेकिन वह अपना आत्मविश्वास नहीं खोता।

कवि आगे कहता है कि डुबकियाँ (प्रयास) लगाते-लगाते अंतत: मोती (सफलता) मिल ही जाता है। इसलिए हमें अपना उत्साह, विश्वास और हिम्मत नहीं हारनी चाहिए।

5. "संघर्ष का मैदान छोड़ मत भागो तुम।" पंक्ति का भाव यह है कि जीवन में आने वाली कठिनाइयों, असफलताओं और चुनौतियों से डरकर या हार मानकर हमें अपने लक्ष्य के मार्ग से पीछे नहीं हटना चाहिए। कवि सोहनलाल द्विवेदी जी के अनुसार, जीवन एक संघर्ष है और मेहनत से जी चुराकर भागने के बजाय साहसपूर्वक उनका सामना करना ही सही दृष्टिकोण है। यह पंक्ति मनुष्य को साहस, धैर्य और विपरीत परिस्थितियों में भी डटे रहने की प्रेरणा देती है। मुसीबतों से डरकर कार्यस्थल या जीवन के संघर्षों (मैदान) को छोड़कर भागना कायरता है। जब तक अंतिम सफलता न मिल जाए, तब तक मेहनत करना नहीं छोड़ना चाहिए।

- **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. चींटी जब
2. आखिर उसकी
3. दुगना उत्साह
4. एक चुनौती
5. ही जय-जयकार

- **पाठ से आगे**

1. कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करने के लिए नियमित अध्ययन, सक्रिय कक्षा भागीदारी, समय प्रबंधन, स्मार्ट अध्ययन तकनीकों (जैसे– नोट्स बनाना और रिवीजन) का संयोजन आवश्यक है। आगे बैठकर ध्यान केंद्रित करने, शिक्षकों से मार्गदर्शन लेने और अवधारणाओं को रटने के बजाय समझने पर ध्यान केंद्रित करने से सफलता निश्चित की जा सकती है।
2. मेहनत का फल सदैव सुख और संतोष देने

वाला होता है क्योंकि यह आत्म-विश्वास बढ़ाता है, योग्यता विकसित करता है और सफलता की ठोस नींव रखता है। यह न केवल भौतिक फल (पैसा, पद) देता है, बल्कि मेहनत से अर्जित सफलता अनमोल और स्थायी होती है, जो लंबे समय तक खुशी प्रदान करती है।

- **भाषा आधारित**

1. **भाववाचक संज्ञा बनाइए–** चढ़ाई, सफलता, कला, हारना, मानवता, पशुता।
2. **प्रत्यय लगाकर नया शब्द –** असफलता, तैराक, घबराहट, ललाई, रंगीला, सपेरा

- **कल्पना आधारित**

1. "कोशिश करने वालों की हार क्यों नहीं होती" का कारण स्पष्ट है कि उनका लक्ष्य साफ होता है। वे अपने लक्ष्य के प्रति चींटी की तरह संघर्ष करते रहते हैं। चींटी दाना लेकर दीवार पर चढ़ने के प्रयास में बार-बार गिरती है, फिर भी बार-बार फिसलकर गिरने के बाद फिर चढ़ती है, अंत में ऊपर चढ़कर ही मानती है। इसी प्रकार जो लोग असफलता मिलने पर भी बार-बार प्रयत्न करते हैं और हर बार अपनी असफलता से गलती में सुधार करते हैं और लक्ष्य के प्रति संवेदनशील बने रहते हैं, उनकी हार नहीं होती।
2. एक क्रिकेट टीम के कप्तान के रूप में, कड़ी मेहनत के बाद हार मिलने पर मैं शांत रहकर टीम का मनोबल बढ़ाऊँगा, हार की जिम्मेदारी लूँगा और सकारात्मक माहौल बनाए रखूँगा। मैं टीम के साथ बैठकर हार के कारणों का विश्लेषण करूँगा, खिलाड़ियों को दोष देने के बजाय उनकी गलतियों से सीखने के लिए प्रेरित करूँगा और अगले मैच के लिए एक बेहतर रणनीति बनाऊँगा।

- **खेल आधारित (बुद्धि परीक्षण)**

1. रेडियो अथवा टेलीविजन
2. लाल बहादुर शास्त्री

14. विजय पर्व

अभ्यास

उच्चारण आधारित

- **शुद्ध लिखो और बोलो–** स्तब्धता, तीव्रता, शिष्टाचार, आक्रमणकारी, खूँखार, प्रस्थान।

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. तैमूर मंगोल आक्रमणकारी था।
2. एकांकी में बलकरन का जन्मदिन मनाया जा रहा है।
3. मुबारक तैमूर का सिपाही था।
4. तैमूर बलकरन से फौज में शामिल होने को कहता है।
5. बलकरन द्वारा लाए दूध को तैमूर पी लेता है।

- **लिखित**

1. पहला ग्रामीण कल्याणी (बलकरन की माँ) को तैमूर के बारे में बताता है कि वह एक बहुत ही क्रूर और निर्दयी आक्रमणकारी है। वह एक दानव के समान है, जो अपने रास्ते में आने वाले हर व्यक्ति की हत्या कर देता है और खून की नदियाँ बहाता है।
2. तैमूर अपने सिपाहियों को बताता है कि हिंदुस्तान आने का मुख्य उद्देश्य अपार सम्पत्ति को लूटना और हीरे-जवाहरात पर कब्जा करना है। वह भारत की इस अकूत दौलत को अपनी महत्वाकांक्षा को पूरा करने का माध्यम मानता है।
3. तैमूर, वीर बलकरन की निडरता और देशभक्ति से प्रभावित होकर उसकी इच्छा (मुराद) पूछता है। बलकरन धन-दौलत नहीं, बल्कि अपने गाँव को आक्रमण से सुरक्षित रखने और अपनी घायल माँ के उपचार का वचन माँगता है।
4. वीर बालक बलकरन ने अपनी असाधारण वीरता और निर्भीकता से क्रूर तैमूर को प्रभावित किया था। बलकरन ने जरा भी डरने के बजाय तैमूर को सीधे चुनौती दी और अपनी जान की परवाह न करते हुए बात की। इस छोटी उम्र के बालक की

निर्भीकता और जिन्दादिली देखकर तैमूर दंग रह गया। उसने बलकरन की बहादुरी की प्रशंसा की और अपनी सेना में शामिल होने का प्रस्ताव तक दिया।

5. अन्त में कल्याणी अपने पुत्र बलकरन को आशीर्वाद देती है कि, 'तुझ जैसा लाल हर घर में पैदा हो।'

- **अपनी समझ से**

1. (ख) 2. (क)
3. (ग) 4. (क)
5. (ख)

- **सोच-समझकर**

1. यदि ग्रामीण कल्याणी को तलघर में नहीं ले जाता, तो कल्याणी तैमूर के सैनिकों द्वारा पकड़ ली जाती या मारी जाती। ऐसी स्थिति में, अपने परिवार की रक्षा के लिए बालक बलकरन का आक्रोश और वीरता का दृश्य नहीं उभर पाता और शायद तैमूर के हृदय परिवर्तन की घटना भी अधूरी रह जाती।
2. यदि गाजी तैमूर, बलकरन द्वारा लाए गए दूध पीने का अहसान नहीं मानता, तो वह अहंकार में आकर बलकरन को बंदी बना लेता, उसे यातनाएँ देता और संभवतः मृत्युदंड भी दे देता। गाजी तैमूर अपने क्रूर स्वभाव के लिए जाना जाता था। यदि वह बलकरन के उपकार को स्वीकार न करता, तो बालक के साथ निश्चित उसका व्यवहार कठोर होता।

- **सही-गलत**

1. (✓), 2. (✗), 3. (✗), 4. (✗), 5. (✓)।

- **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. चुपचाप, 2. किस्मत,
3. तलवार, 4. बहादुर,
5. चाकू।

- **पाठ से आगे (मन के विचार)**

1. प्राचीन काल से लेकर आधुनिक युग तक भारत पर कई आक्रमणकारियों और लुटेरों ने हमले किए। मुख्य विदेशी आक्रमणकारियों और लुटेरों में फारसी (दारा प्रथम), यूनानी (सिकंदर), अरब (मोहम्मद बिन कासिम), तुर्क (महमूद गजनवी, मुहम्मद गोरी), मंगोल, नादिरशाह, अहमदशाह अब्दाली और अंत में ब्रिटिश शामिल थे। इन आक्रमणकारियों ने हिंदुस्तान की अपार सम्पदा को लूटा।
2. संकट या युद्ध की स्थिति में देश की सुरक्षा और स्थिरता सर्वोपरि होती है। ऐसी घड़ी में नागरिकों को अफवाहों से बचना चाहिए और सरकार तथा सेना के निर्देशों का पालन करना चाहिए।
हमें अपनी सेना का मनोबल बढ़ाना चाहिए, आपातकालीन सेवाओं में सहयोग करना चाहिए। इसके अलावा, आर्थिक रूप से मजबूत रहकर, स्थानीय प्रशासन की मदद करके और सजग नागरिक बनकर हम राष्ट्र की रक्षा में अपना सर्वोच्च योगदान दे सकते हैं।

- **भाषा आधारित**

1. **समासों का विग्रह–**
दिन और रात, दाल और रोटी, राजा और रानी, पाप और पुण्य, देश और विदेश, भाई और बहन।
2. **विच्छेदित पदों की संधि–**
पवित्र, शयन, भवन, चयन, नाविक, गवीश।

- **कल्पना आधारित**

1. नौकायन (नौका यात्रा) का अनुभव न होने पर, जब मैं पहली बार नाव पर कदम रखूँगा, तो मुझे एक अजीब सा रोमांच और अनजाना डर महसूस होगा। नाव के डगमगाते ही संतुलन बिगड़ सकता है, जिससे शुरू में घबराहट होगी। लेकिन जैसे-जैसे में पानी की लहरों के साथ तालमेल बिठाऊँगा (या नाव को चलाऊँगा), यह डर धीरे-धीरे एक अद्भुत और शांत सुकून में बदल जाएगा।
2. यदि मैं वीर सिपाही होता, तो अपने प्राणों की तनिक भी परवाह किए बिना, हिमालय की बर्फीली चोटियों और रेगिस्तान की तपती धूप में मातृभूमि की रक्षा करता। सीमा पर सजग रहकर किसी भी दुश्मन को अपने

वतन की जमीन पर कदम न रखने देता। मैं हँसते-हँसते देश के लिए सर्वोच्च बलिदान देने को तत्पर रहता और तिरंगे की शान को हमेशा ऊपर रखता। मेरे लिए देश की सेवा और सुरक्षा ही मेरा सर्वोच्च धर्म होता।

- **खेल आधारित**

बुद्धि परीक्षण

आकाश के पर्यायवाची-गगन, आसमान, अम्बर, नभ, व्योम, अनंत।

15. नंगे पैर

उच्चारण आधारित

- **शुद्ध लिखो और बोलो–**

कार्यक्रम, कष्टपूर्वक, निश्चय, त्योहार, उत्साह, कठिनाई

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. बेबी दोपहर के समय पलंग पर बैठकर खिड़की से बाहर झाँक रही थी।
2. कुर्सी पर बैठकर बेबी ने अपनी माँ से कहा कि माँ! आज नया पोस्टमैन आया था।
3. तीसरे दिन बेबी ने पोस्टमैन से कहा कि "क्या तुम नये पोस्टमैन हो?"
4. पोस्टमैन के नंगे पैर देखकर बेबी ने निश्चय किया कि वह उस गरीब पोस्टमैन को नंगे पैर नहीं रहने देगी।
5. बेबी त्योहार का उपहार माँगने के लिए पोस्टमैन से कहती है।

- **लिखित**

1. बेबी ने जब डाक लेने हेतु हाथ बढ़ाया तो उसे याद आया कि आज वह दाढ़ी वाला पोस्टमैन नहीं था, बल्कि बच्चों जैसे कोमल चेहरे वाला कोई नया पोस्टमैन था।
2. कोमल और दबी हुई आवाज में पोस्टमैन ने बेबी से कहा, "लगने दो बहिन! पोस्टमैन का काम जिस-तिस की डाक को जिस-तिस के हाथ में सौंपने का है, अहाते में फेंककर चले जाने का नहीं।"
3. पोस्टमैन को नंगे पैर देखकर बेबी सोचने लगी कि पोस्टमैन ने अपने पैरों में कुछ पहना क्यों नहीं था? शायद उसके जूते फट गये होंगे, वे सही करने हेतु मोची को दिए होंगे।
4. धूप से उसका चेहरा लाल हो जाता और उसकी कमीज पसीने के कारण पीठ से चिपकी रहती।
5. वह मन ही मन सोचने लगा– इस बच्ची ने मेरे नंगे पैरों को जूते दे दिए किंतु उसके पास तो पैर ही नहीं हैं वो मैं उसे कैसे दे पाऊँगा?

- **प्रत्यास्मरण**

1. बेबी ने मुस्कुराते हुए डाकिया को जूतों का बंडल सौंपा।
2. पोस्टमैन ने पोस्ट ऑफिस पहुँचकर अपने साहब से कहा, "साहब मेरी लाइन बदल दीजिए, सिटी में कहीं भी बदली कर दीजिए।"
3. बेबी के उपहार को पाकर डाकिया की आँखें भर आईं क्योंकि एक विकलांग बच्ची ने नंगे पैरों को जूते दे दिए।
4. पोस्टमैन भट्ट के पास जाकर बोला, "साहब मेरी लाइन बदल दीजिए, सिटी में कहीं भी बदली कर दीजिए।"

- **अपनी समझ से**

1. (ग) पलंग पर
2. (ख) साढ़े बारह बजे
3. (ख) प्रसन्नता
4. (ख) कोलतार की सड़कें
5. (ग) हरीबा

- **सोच-समझकर**

1. बेबी के स्थान पर मैं पोस्टमैन को नंगे पैर देखता तो वही करता जो बेबी ने किया। अपने माता-पिता से पोस्टमैन के प्रति अपने विचार रखता और मानवीय संवेदनाओं से अवगत कराता। अपने माता-पिता से कह कर उसके लिए एक जोड़ी बाजार से जूते

मँगवाता और उसे पोस्टमैन को देता, जिससे मुझे भी खुशी मिलती और पोस्टमैन भी खुश होता।

2. पोस्टमैन (डाकिया) का जीवन अत्यधिक जिम्मेदारी वाला होता है क्योंकि वे व्यक्तिगत पत्रों, महत्त्वपूर्ण दस्तावेजों, मनीऑर्डर (पैसों) और पार्सल को हर मौसम में सही पते पर समय से पहुँचाते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में, वे बैंकिंग सेवाओं, आधार कार्ड और पेंशन जैसे कार्यों के जरिए लोगों को सरकार से जोड़ते हैं, जिससे उनकी भूमिका बहुत भरोसेमंद हो जाती है।

   एक पोस्टमैन समयबद्धता, ईमानदारी और कड़ी मेहनत के साथ लोगों के बीच भरोसे का पुल बनाता है, जो उनके कार्य को अत्यधिक जिम्मेदारी पूर्ण बनाता है।

● **पंक्तियों पर चर्चा**

1. "शौक से कोई नंगे पैर घूमेगा बेटी?" पंक्ति का भावार्थ यह है कि गरीबी, मजबूरी या अभाव के कारण व्यक्ति को कष्ट सहना पड़ता है, न खुशी से। यह एक भावात्मक अभिव्यक्ति है जो दर्शाती है कि सुख-सुविधाओं के अभाव में, जैसे कि नंगे पैर चलना, किसी की इच्छा नहीं बल्कि मजबूरी होती है। यह सामाजिक और आर्थिक असमानता के प्रति दर्दनाक विवशता है।

   यह पाठ के आधार पर, गरीबी और अभाव के जीवन को उजागर करती है जहाँ बुनियादी जरूरतें भी पूरी नहीं होतीं। यह पंक्ति अत्यधिक अभावपूर्ण जीवन की विवशता को एक भावनात्मक सवाल के रूप में प्रस्तुत करती है।

2. "माप लेकर वह धीरे-धीरे कमरे में वापस आ गई।" पंक्ति का भावार्थ यह है कि मुख्य पात्र बेबी अपनी विकलांगता के बावजूद अपनी जिम्मेदारी के प्रति सतर्क थी। 'धीरे-धीरे वापस आना' उसके संकोच, हताशा और जीवन के प्रति उसकी नीरसता को दर्शाता है। कहानी की पात्र का जीवन अत्यन्त सादा और संघर्षपूर्ण है, जो उसके हर छोटे काम में झलकता है।

3. "आपने त्योहार का उपहार नहीं माँगा?" बेबी ने डाकिया से इसलिए कहा कि— ज्यादातर सरकारी कर्मचारी तीज-त्योहार पर उपहार माँगते हैं। बेबी की इच्छा थी कि डाकिया के उपहार माँगने पर वह डाकिया को जूता उपहारस्वरूप देकर उसकी मदद कर सके।

4. "साहब मेरी लाइन बदल दीजिए, सिटी में कहीं भी बदली कर दीजिए।" पंक्ति का भावार्थ है कि गरीब और अभावग्रस्त लाचारी में अपनी खुद्दारी और गरिमा नहीं खोता। बेबी द्वारा जूते उपहारस्वरूप देकर डाकिये के मन में शर्मिंदगी के कारण उसने ऐसा कहा। यह पंक्ति कहानी में नंगे पैर दौड़ने वाले पात्र की विवशता और मानवीय गरिमा को पुनः प्राप्त करने के संघर्ष को उजागर करती है।

● **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. गीत-माला	4. नंगे पैर
2. पोस्टमैन	5. सकपका कर।
3. भगवान	

● **पाठ से आगे (मन के विचार)**

1. यदि मुझे एक डाकिया का कार्य सौंपा जाये, तो मैं अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन पूरी निष्ठा, ईमानदारी और समयबद्धता के साथ करूँगा/करूँगी। मैं अपनी वर्दी और झोले का सम्मान करते हुए, गर्मी-बरसात की परवाह किये बिना लोगों की चिट्ठियाँ, मनीऑर्डर और पार्सल समय पर उन तक पहुँचाऊँगा/पहुँचाऊँगी। मेरा उद्देश्य केवल डाक पहुँचाना नहीं, बल्कि लोगों के चेहरों पर मुस्कान लाना और उनके विश्वास को बनाए रखना होगा।

   एक डाकिया के रूप में, मैं समाज में रिश्तों की डोर को जोड़ने का कार्य करूँगा/करूँगी और अपनी वर्दी के गौरव को बनाए रखूँगा/रखूँगी।

2. विकलांग या दिव्यांग व्यक्तियों को शारीरिक, सामाजिक, आर्थिक और मनोवैज्ञानिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। मुख्य कठिनाइयों में दुर्गम बुनियादी ढाँचा (रैंप, लिफ्ट की कमी), रूढ़िवादी सामाजिक दृष्टिकोण, शिक्षा और रोजगार के सीमित अवसर, परिवहन की बाधाएँ और

पर्याप्त चिकित्सा सेवाओं का अभाव शामिल है, जो उनके स्वतंत्र जीवन और समावेशन को प्रभावित करते हैं।

- **भाषा आधारित**

1. **शब्दों का वाक्यों में प्रयोग –**

मौन – कक्षा में अध्यापक के आते ही छात्र **मौन** हो गये।

जुबान – राम ने मुझे सहायता की **जुबान** दी है।

उत्साह – बच्चों ने बड़े **उत्साह** से दीपावली का त्योहार मनाया।

त्योहार – **त्योहार** हमारे जीवन में खुशी और उत्साह लाते हैं।

संसार – हमें अपने अंदर के **संसार** (मन) को शांत रखना चाहिए।

2. **विलोम शब्द**

धूप – छाया/छाँव
माँ – पिता/बाप
बाहर – भीतर
परिचित – अपरिचित
मौन – वाचाल
पीछे – आगे।

- **कल्पना आधारित**

1. एक जगह बैठने से रीढ़ की हड्डी के निचले हिस्से पर दबाव पड़ता है। कूल्हे की गतिशीलता बनाए रखने के लिए बीच-बीच में उठकर टहलना जरूरी है। सोफे या डेस्क पर लंबे समय तक बैठे रहने से मांसपेशियाँ सख्त हो जाती हैं और रीढ़ की हड्डी के स्नायुबंधन अपनी जगह से हट सकते हैं या जाम हो सकते हैं।

दिनभर एक ही जगह बैठे रहने से कई तरह की स्वास्थ्य समस्याओं का खतरा बढ़ जाता है। गतिहीन जीवनशैली से कुछ खास तरह के कैंसर, जैसे कि कोलोन कैंसर, एंडोमेट्रियल कैंसर और फेफड़ों के कैंसर का खतरा बढ़ जाता है। बैठने से रक्तचाप बढ़ता है और चयापचय धीमा हो जाता है।

2. मोबाइल और इंटरनेट के दौर में डाक विभाग का महत्त्व कम हुआ है, लेकिन पहले डाकिये की पत्र लाने की खुशी अनमोल थी। वह खुशी बेसब्री से इंतजार, अपनों के हाथों की लिखावट को छूने, कागज की महक और पत्रों को सहेजकर रखने जैसी भावनाओं से भरी होती थी, जो आज के डिजिटल संदेशों में दुर्लभ है।

- **खेल आधारित (बुद्धि परीक्षण)**

(क) महात्मा गाँधी
(ख) वल्लभभाई पटेल

16. पद और दोहे

उच्चारण आधारित

- **शुद्ध लिखो और बोलो–** प्रकृति, उत्तम, उज्ज्वल, आशीर्वाद, अभिलाषा, आकर्षण

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. मीरा ने अपना पति गिरधर गोपाल को मान लिया है।
2. सर्पों के लिपटे रहने पर भी चंदन में विष (जहर) नहीं समाता है।
3. कल का काम आज करना चाहिए।
4. कबीर ने अपनी बात कमाल (अपने पुत्र) से कही है।
5. परेशानी में काम आने वाले सच्चे मित्र होते हैं।

- **लिखित**

1. रहीमदास जी के अनुसार बुरे दिनों के समय चुप होकर बैठ जाना चाहिए।
2. मीराबाई ने कुल की इज्जत को छोड़ दिया है।
3. मीराबाई संसार (जगत) देखकर रोने लगती है।
4. कबीर स्वयं को बुरा बतलाते हैं।
5. दूसरों के लिए काँटा बोने वाले के लिए फूल त्रिशूल बन जाते हैं।

● **प्रत्यास्मरण**

संदर्भ एवं प्रसंग – प्रस्तुत पद हमारी पाठ्य-पुस्तक पद एवं दोहे पाठ से लिया गया है। इस पद की रचयिता कृष्ण भक्त कवयित्री मीराबाई हैं। मीराबाई ने श्रीकृष्ण को अपना पति मानकर उनकी भक्ति की है।

व्याख्या – मीराबाई कहती हैं- मेरे तो गिरधर गोपाल अर्थात् श्रीकृष्ण ही सर्वस्व हैं। अन्य किसी से मेरा कोई सम्बन्ध नहीं है। जिस कृष्ण के सिर पर मोर मुकुट है, वही मेरा पति है। मैं श्रीकृष्ण को ही अपना पति (रक्षक) मानती हूँ। इस भक्ति के लिए मैंने अपने माता-पिता, भाई-बन्धु आदि सभी को छोड़ दिया है। मैंने तो अपने वंश परिवार की मर्यादा का भी त्याग कर दिया है, अब मेरा कोई कुछ नहीं कर सकता अर्थात् मुझे किसी की कोई चिन्ता नहीं है। मैंने तो लोकलाज को खोकर संतों के निकट बैठना स्वीकार कर लिया है। साधु-संतों के पास बैठने से यदि लोक-लज्जा जाती है तो भले ही चली जाए, मुझे कोई अन्तर नहीं पड़ता है। मैंने तो आँसुओं रूपी जल से प्रभु-प्रेम रूपी बेल को बोया है। अब तो यह प्रेम बेल फलने-फूलने लगी है और इसमें आनन्द रूपी फल आ रहा है। कवयित्री कहती है कि मैंने दूध की मथनियाँ को बड़े प्रेम से मथा है। इसमें दही को मथकर घी तो निकाल लिया है और छाछ को छोड़ दिया है अर्थात् सार-तत्त्व को तो ग्रहण कर लिया है और सारहीन अंश को छोड़ दिया है। मैं तो भक्तों को देखकर प्रसन्न होती हूँ और संसार के रंग-ढंग देखकर रोती हूँ अर्थात् दुःखी होती हूँ। मीरा अपने प्रभु से प्रार्थना करती है कि मैं तो आपकी दासी हूँ। आप मुझे इस भवसागर से पार उतारिये।

● **अपनी समझ से**

1. (ख) प्रेम बेलि
2. (क) दासी
3. (ख) फूल
4. (क) भूखे को
5. (क) नीके

● **सोच समझकर**

1. मीराबाई के समान ही कई भक्तिन नारियाँ हैं, जिनमें अंडाल (आंडाल) एक प्रमुख नाम है, जिन्होंने भगवान विष्णु (रंगनाथ) को समर्पित होकर प्रेम और भक्ति के पदों की रचना की, सामाजिक बंधनों को तोड़कर 'दिव्य प्रेम' का मार्ग चुना और अपनी कविताओं से अमर हो गईं, जैसे मीरा ने कृष्ण के लिए किया, उन्होंने भी अपनी भक्ति को सर्वोपरि माना और समाज की परवाह किए बिना ईश्वर से एकाकार हो गईं, जो आज भी भक्तों के लिए प्रेरणा स्रोत हैं।
   अंडाल का जीवन मीराबाई के समान ही अटूट विश्वास, सामाजिक प्रतिरोध और दिव्य प्रेम का प्रतीक है, जिन्होंने भक्ति के माध्यम से अपनी पहचान बनाई और अनंत काल तक स्मृतियों में जीवित रहीं।
2. **कबीर दास के दोहे**
   1. गुरु गोविंद दोऊ खड़े,
      काके लागूँ पायँ।
      बलिहारी गुरु आपने,
      गोविन्द दियो बताए।।

   सीख– गुरु और गोविंद (ईश्वर) दोनों एक साथ खड़े हों तो किसके पैर छुएँ? मैं अपने गुरु पर बलिहारी जाता हूँ, जिन्होंने मुझे ईश्वर का रास्ता दिखाया।
   2. तिनका कबहू न निन्दिये,
      जो पाँव तर होय।
      कबहूँ उड़ आँखों पड़े,
      पीर घनेरी होय।।

   सीख– किसी छोटे तिनके की भी निन्दा नहीं करनी चाहिए, जो पैरों के नीचे पड़ा हो क्योंकि वही तिनका उड़कर आँख में पड़ जाए तो बहुत दर्द होता है।
   3. बड़ा हुआ तो क्या हुआ,
      जैसे पेड़ खजूर।
      पंछी को छाया नहीं,
      फल लागे अति दूर।।

   सीख– बड़ा होने का क्या फायदा, अगर वह खजूर के पेड़ जैसा हो। वह न तो पंछियों को छाया देता है और न ही उसके फल आसानी से मिलते हैं। यानी, व्यक्ति को बड़ा होकर दूसरों के काम आना चाहिए।

   रहीम के दोहे–
   1. रहिमन धागा प्रेम का,
      मत तोड़ो चटकाय।
      टूटे से फिर न जुड़े,
      जुड़े गाँठ पड़ जाये।।

सीख– प्रेम के धागे को कभी झटके से नहीं तोड़ना चाहिए। एक बार टूट जाने पर यह दोबारा नहीं जुड़ता और जुड़ भी जाये तो उसमें गाँठ पड़ जाती है।

2. कह रहीम कैसे निभै
   बेर केर को संग।
   वे डोलत रस आपने,
   उनके फाटत अंग।।

सीख– रहीमदास जी कहते हैं कि बेर और केला साथ-साथ नहीं रह सकते हैं वैसे ही सज्जन और दुर्जन साथ-साथ नहीं रह सकते। जब बेर की डाली तो अपने रस में हवा में झूमती है तो केले के पत्तों को फाड़ देती है।

- **भाव चर्चा**

1. इस पंक्ति के माध्यम से मीराबाई कह रही हैं कि मुझे लोक-लाज या समाज की कोई परवाह नहीं है।
2. कबीरदास जी इस दोहे में कहते हैं कि जब मैं दूसरों की बुराई देखने निकला, तो कोई भी बुरा नहीं मिला लेकिन जब मैंने दिल में झाँककर देखा, तो समझ आया कि मुझसे बुरा कोई नहीं है।
3. इस पंक्ति में रहीमदास जी ने मित्र की पहचान बताई है कि जो व्यक्ति संकट के समय में आपका साथ नहीं छोड़ता यानि कि संकट के समय साथ देता है, वही असली मित्र है।
4. रहीमदास के दोहे का भाव यह है कि संसार में हर छोटी-बड़ी वस्तु या व्यक्ति की अपनी उपयोगिता होती है। हमें किसी भी वस्तु या व्यक्ति को छोटा समझकर त्यागना नहीं चाहिए। जीवन में किसी भी छोटी-बड़ी वस्तु की आवश्यकता पड़ सकती है, इसलिए हर एक का सम्मान करना चाहिए।
5. कवि रहीम द्वारा रचित इस पंक्ति का भाव है कि जीवन में एक समय में एक ही मुख्य लक्ष्य या कार्य पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए, जिससे सफलता अवश्य मिलती है। एक साथ कई काम करने से कोई भी कार्य सही नहीं हो पाता।

- **रिक्त स्थानपूर्ति**

1. आनन्द, 2. मीरा, 3. लोई, 4. तिरसूल, 5. कसौटी।

- **पाठ से आगे (मन के विचार)**

1. यदि हम मीराबाई के स्थान पर होते तो वही करते जो मीराबाई के आदर्शों से शिक्षा मिलती है। मीराबाई भक्तियोग की साक्षात् प्रतिमूर्ति थीं। हमारा भी प्रयास आदर्श प्रेम, निस्वार्थ निश्छल प्रेम-भक्ति, ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण-भाव, एकनिष्ठ समर्पण, एकाग्रचित्त से एक लक्ष्य में मन को विलीन करते, चित्त की शुद्धता जैसे जीवन मूल्य धारण कर ईश्वर प्राप्ति के मार्ग पर चलते।
2. कबीरदास जी ने दोनों धर्मों के आडम्बर, अंधविश्वास, कर्मकाण्ड, कुरीति और अनाचार का बिना भेद किए समान भाव से प्रतिरोध किया है। कबीर ने हिंदुओं की मूर्तिपूजा का बराबर विरोध किया है। इस विरोध के अनेक तर्क उन्होंने प्रस्तुत किए। उन्होंने जातिगत व्यवस्था का पुरजोर विरोध किया। हम भी इन बुराइयों का विरोध करेंगे।

- **भाषा आधारित**

1. **पर्यायवाची शब्द**
   1. जगत – संसार, दुनिया, विश्व।
   2. तलवारि – कृपाण, असि, शमशीर।
   3. फूल – प्रसून, कुसुम, सुमन।
   4. बेल – लता, लतिका, वल्ली।
   5. पल – क्षण, लम्हा, घड़ी।
2. **उपसर्ग जोड़कर नये शब्द**

उपसर्ग		मूल शब्द		नया शब्द
अप	+	मान	=	अपमान
परा	+	जय	=	पराजय
नि	+	रंजन	=	निरंजन
अति	+	आचार	=	अत्याचार
अध	+	पका	=	अधपका

- **कल्पना आधारित**

1. यदि कबीरदास, ईश्वर चंद्र विद्यासागर, स्वामी विवेकानन्द और राजा राममोहन राय जैसे महान समाज-सुधारक न होते, तो भारत सामाजिक कुरुतियों और अंधविश्वास और अनपढ़ता के गहरे अंधकार में डूबा रहता। सती प्रथा, बाल विवाह, छुआछूत और जातिवाद जैसी कुप्रथाएँ समाज को जकड़े

रहतीं, जिससे राष्ट्र का विकास पूरी तरह अवरुद्ध हो जाता और आधुनिक, शिक्षित भारत की कल्पना भी नामुमकिन होती।

विद्यासागर के प्रयासों (जैसे- हिंदू विधवा पुनर्विवाह अधिनियम) के बिना, विधवाओं को नारकीय जीवन जीने पर मजबूर होना पड़ता, और सती प्रथा जैसी कुरीतियों के कारण अनगिनत महिलाओं की जान जाती।

आधुनिक शिक्षा का प्रसार न होने से अंधविश्वास और रूढ़िवादिता का बोलबाला रहता। राजा राममोहन राय जैसे सुधारकों के बिना तर्कवाद और पश्चिमी शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण रूढ़िवादी बना रहता।

कबीरदास जैसे संतों ने धर्म के नाम पर पाखंड और जातिवाद पर चोट की थी। इनके बिना समाज अछूत प्रथा के कारण गहराई से विभाजित और कमजोर रहता।

स्वामी विवेकानंद ने युवा पीढ़ी को आत्मविश्वास और भारतीय संस्कृति की महानता का बोध कराया, उनके बिना देश औपनिवेशिक मानसिकता में फँसा रहता और धर्म संसद जैसे मंचों पर भारत की बुलंद आवाज न गूँजती।

संक्षेप में, इन सुधारकों के बिना, भारत एक प्रगतिशील और एकीकृत राष्ट्र न बनकर कुप्रथाओं के बोझ तले दबा हुआ एक पिछड़ा समाज बना रहता।

2. भगवान श्रीकृष्ण द्वारा मोर मुकुट धारण करने के पीछे मुख्य कारण प्रकृति से प्रेम, राधा-कृष्ण का प्रेम प्रतीक, मानवीय अहंकार पर विजय का संदेश है। यह मोर पंख भगवान की चंचलता, वृंदावन से जुड़ाव और पवित्रता (ब्रह्मचर्य) का प्रतीक है।

- **खेल आधारित (बुद्धि परीक्षण)**

तो को टा बु ता हि य फू।
तो ल को ल है बा है सू।।
हि ही म म ति गे, ब न
ब हु हु री।
बि क टी सै, ते साँ मी।।

17. पर्यावरण प्रदूषण : गम्भीर समस्या

उच्चारण आधारित

छात्र कक्षा अध्यापक की सहायता से स्वयं करें।

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. निशा ने अपनी कक्षा अध्यापिका को बताया कि 'कितनी जोर से बारिश हो रही है, मैम'।
2. शिक्षिका ने बेमौसम की बरसात का पर्यावरण प्रदूषण कारण बताया।
3. पर्यावरण के अंगों के नाम– वायु, जल, वनस्पति-जगत के साथ ही भूमि, नदी, पशु-पक्षी तथा खनिज सम्पदा भी पर्यावरण के अंग हैं।
4. पाठ में प्रदूषण के चार कारण बताए हैं, जो इस प्रकार हैं– वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण और मृदा प्रदूषण।
5. भूमि प्रदूषण से मानवों में त्वचा कैंसर, श्वसन संबंधी बीमारियाँ तथा वन्य जीवों का विस्थापन, भूजल का दूषित होना और मिट्टी की उर्वरता में कमी आदि प्रभाव दिखाई देते हैं।

- **लिखित**

1. वायु को प्रदूषित करने में मानव सबसे आगे है। विकास की चाह में लगाए गए बड़े-बड़े कल-कारखाने अत्यधिक धुआँ उगल रहे हैं। वायु प्रदूषण का अर्थ है-हानिकारक गैसों, धूल के कणों और धुएँ का मिलना। इसके प्रमुख कारणों में वाहनों का धुआँ, औद्योगिकीकरण और निर्माण-कार्य शामिल हैं। इसे रोकने के लिए सार्वजनिक परिवहन का उपयोग, अधिक पेड़ लगाना, सौर ऊर्जा को अपनाना, कारखानों के उत्सर्जन को कम करना और कचरा न जलाना सबसे प्रभावी उपाय हैं। इन उपायों को अपनाकर हम हवा की गुणवत्ता में सुधार कर सकते हैं और एक स्वस्थ भविष्य की ओर बढ़ सकते हैं।
2. मनुष्य की अनियंत्रित गतिविधियों, आधुनिकता

की अंधी दौड़ और संसाधनों के अंधाधुंध दोहन ने प्राकृतिक संतुलन को तहस-नहस कर दिया है। वनों की कटाई, औद्योगिकीकरण, प्लास्टिक और कचरा प्रबंधन का अभाव, कृषि में रसायनों के उपयोग से जल स्रोत प्रदूषित हो रहे हैं।

मनुष्य के लालच और असीमित आवश्यकताओं के कारण प्रकृति का दोहन हुआ है, न कि पोषण। जहाँ प्रकृति स्वयं को पुनर्जीवित कर सकती है, वहीं मानव निर्मित प्रदूषक इतने अधिक हैं कि पर्यावरण अब उन्हें सहने में असमर्थ है, जिससे स्पष्ट है कि इस संकट के लिए मुख्य रूप से मनुष्य ही जिम्मेदार है।

3. जल प्रदूषण से तात्पर्य नदियों, झीलों, महासागरों और भूजल जैसे जल निकायों के हानिकारक पदार्थों (औद्योगिक कचरा, सीवेज, रसायनों) से दूषित होने से है। यह मानवीय गतिविधियों के कारण होता है, जिससे पानी की गुणवत्ता गिर जाती है और यह पीने, नहाने या कृषि के लिए असुरक्षित हो जाता है, जो जलीय जीवन और मानव स्वास्थ्य के लिए खतरनाक है।

   जल प्रदूषण का मुख्य कारण – औद्योगिक अपशिष्ट (कारखानों का जहर), कृषि अपवाह (कीटनाशक, उर्वरक), अनुपचारित सीवेज (मलजल) और प्लास्टिक कचरा मुख्य कारक हैं।

   प्रभाव– इससे हैजा, टाइफाइड जैसी बीमारियाँ फैलती हैं, जलीय पारिस्थितिकी तंत्र नष्ट होता है और 'डेड जोन' (जहाँ जीवन संभव नहीं है) बन जाते हैं।

   समाधान– सीवेज उपचार, रसायनों का कम उपयोग, प्लास्टिक पर प्रतिबंध और जल निकायों में कचरा फेंकने से बचना ही उसके नियंत्रण के उपाय हैं। यह गंभीर पर्यावरणीय चुनौती है जो पीने योग्य पानी की सीमित मात्रा को नष्ट कर रही है।

4. ध्वनि प्रदूषण मानव स्वास्थ्य के लिए एक गंभीर खतरा है जो न केवल सुनने की क्षमता को कम करता है, बल्कि उच्च रक्तचाप, मानसिक तनाव, अनिद्रा और हृदय रोगों का कारण बनता है। लगातार शोर से बच्चों में एकाग्रता की कमी, सिरदर्द, चिड़चिड़ापन और तंत्रिका तंत्र पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

5. शुद्ध वायु में गैसों का प्रतिशत (आयतन के अनुसार)

   नाइट्रोजन– लगभग 78.08 प्रतिशत

   ऑक्सीजन– लगभग 20.95 प्रतिशत (लगभग 21 प्रतिशत)

   आर्गन– लगभग 0.93 प्रतिशत

   कार्बन डाइ-ऑक्साइड– लगभग 0.04 प्रतिशत

   अन्य सूक्ष्म गैसें– निऑन, हीलियम, क्रिप्टन और हाइड्रोजन बहुत ही कम मात्रा में (कुल 0.01 प्रतिशत से कम)

   जलवाष्प– यह स्थान और समय के अनुसार 0 से 4 प्रतिशत तक बदलती रहती है, लेकिन शुष्क वायु में यह नगण्य होती है। यह संरचना पृथ्वी के वायुमण्डल को स्थिर रखने और जीवन के लिए आवश्यक है।

- **प्रत्यास्मरण**

1. प्रदूषण को रोकने के लिए अंधाधुंध बढ़ती जनसंख्या पर भी रोक लगाना आवश्यक है।
2. सन् 1947 में भारत की जनसंख्या केवल 32 करोड़ थी।

3. बढ़ती हुई आबादी की अन्न, जल, फल, आवास, वस्त्र आदि आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए वनों को बड़े पैमाने पर काटा जा रहा है।
4. बढ़ती जनसंख्या पर नियंत्रण किया जाये तो प्रदूषण की समस्या काफी हद तक स्वयं सुलझ जाएगी।

● **अपनी समझ से**

1. (घ) 32 करोड़
2. (ख) चार
3. (ख) पर्यावरण प्रदूषण को
4. (क) वृक्षों का कटना
5. (घ) 20.95%

● **सोच-समझकर**

1. प्रदूषण नियंत्रण का खतरा तेजी से बढ़ते औद्योगिकीकरण, वाहनों के बेहिसाब इस्तेमाल, जनसंख्या वृद्धि, वनों की कटाई और अपर्याप्त कचरा प्रबंधन के कारण लगातार बढ़ रहा है। विकास की अंधी दौड़ में पर्यावरण को नजरअंदाज करना, पुराने वाहनों का चलना और रासायनिक खेती से जमीन-पानी का विषैला होना इस गंभीर स्थिति के मुख्य कारण हैं।
2. पर्यावरण को स्वच्छ बनाने के लिए व्यक्तिगत प्रयास बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। इसके लिए प्लास्टिक का उपयोग बंद करना, अधिक से अधिक पेड़ लगाना, पानी और बिजली बचाना, कचरे का सही निस्तारण करना (कम्पोस्टिंग) और सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करना सबसे प्रभावी तरीके हैं। व्यक्तिगत स्तर पर आदतें बदलकर हम प्रदूषण कम कर सकते हैं।
3. वृक्षों की कटाई और पर्यावरण प्रदूषण का सीधा और गहरा संबंध है क्योंकि पेड़ प्राकृतिक एयर प्यूरीफायर (वायुशोधक) हैं। इनकी कमी से वायुमंडल में CO_2 बढ़ती है (ग्लोबल वार्मिंग) और ऑक्सीजन कम होती है। साथ ही वनों के विनाश से मृदा अपरदन, जल स्तर में गिरावट और जैव विविधता का विनाश होता है जो अंततः विनाशकारी जलवायु परिवर्तन को जन्म देता है।

● **सही-मिलान**

1. (स), 2. (द), 3. (य), 4. (ब), 5. (अ)।

● **सही-गलत**

1. (✓), 2. (✗), 3. (✓), 4. (✗), 5. (✓)।

● **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. वायु
2. 78.09
3. पेट
4. पर्यावरण
5. विश्व

● **पंक्तियों पर चर्चा**

1. "प्रदूषण का खतरा निरंतर बढ़ता ही जा रहा है।" पंक्ति का भावार्थ यह है कि आधुनिक औद्योगीकरण, शहरीकरण और अनियंत्रित उपभोग के कारण हमारे पर्यावरण (हवा, पानी, मिट्टी) में हानिकारक तत्वों की मात्रा लगातार बढ़ रही है। यह समस्या थमने के बजाय तेजी से विकराल रूप ले रही है जो मानव स्वास्थ्य और संपूर्ण पारिस्थितिक तंत्र के लिए एक विनाशकारी चुनौती बन गई है। वायु, जल और मृदा तीनों ही प्रदूषित हो चुके हैं जिससे जीवन का अस्तित्व खतरे में पड़ गया है।
2. यह कथन पूर्णतः सत्य है कि मनुष्य ने अपने तुच्छ स्वार्थों जैसे कि शहरीकरण, औद्योगीकरण और कृषि विस्तार के लिए हरे-भरे वृक्षों की अंधाधुंध कटाई की है। इसके परिणामस्वरूप वायु, जल और मृदा प्रदूषण में तीव्र वृद्धि हुई है जिससे जलवायु परिवर्तन वन्यजीवों के विलुप्त होने और स्वास्थ्य संबंधी बीमारियों का खतरा बढ़ गया है।

   पेड़ कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित कर प्राणवायु (ऑक्सीजन) छोड़ते हैं; इनकी कमी से हवा में हानिकारक गैसें बढ़ रही हैं। प्रदूषण के कारण मनुष्यों में साँस संबंधी और अन्य गंभीर बीमारियाँ फैल रही हैं। पर्यावरण संरक्षण के लिए अधिक से अधिक वृक्षारोपण करना और सतत विकास को अपनाना अत्यंत आवश्यक है।
3. "प्रकृति के संतुलन को बिगाड़ने में मनुष्य की बहुत बड़ी भूमिका है।" पंक्ति का भाव यह है कि आधुनिकता और स्वार्थ

के कारण मनुष्य ने पर्यावरण को सबसे अधिक नुकसान पहुँचाया है। वनों की कटाई, औद्योगीकरण प्रदूषण और प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन से पारिस्थितिक संतुलन बिगड़ गया है। यह मानवीय गतिविधियाँ ग्लोबल वार्मिंग आपदाओं और प्रजातियों के विलुप्त होने का कारण बन रही हैं।

संक्षेप में, यह पंक्ति मनुष्य को उसके द्वारा प्रकृति पर किए जा रहे अत्याचारों के प्रति सचेत करती है।

- **पाठ से आगे (मन के विचार)**

1. औद्योगिकीकरण पर्यावरण के लिए अत्यधिक हानिकारक है क्योंकि यह वायु, जल और मृदा प्रदूषण का प्रमुख स्रोत है जो पारिस्थितिक तंत्र को तबाह कर रहा है। यह हानिकारक गैसों, जहरीले अपशिष्ट और वनों की कटाई के माध्यम से जलवायु परिवर्तन, जैवविविधता में कमी और प्राकृतिक संतुलन को बिगाड़ रहा है।
2. एक छात्र होने के नाते मैं "कम करें, पुनः उपयोग करें और पुनर्चक्रित करें।" (3R) के सिद्धांत को अपनाकर व्यक्तिगत जागरूकता फैलाकर और छोटे-छोटे पर्यावरणीय कदम उठाकर प्रदूषण से निपटूँगा। मैं सार्वजनिक परिवहन/साइकिल का उपयोग, प्लास्टिक निषेध, वृक्षारोपण और ऊर्जा संरक्षण (बिजली बचाना) जैसी आदतों को अपनी जीवनशैली में अपनाकर सकारात्मक बदलाव लाऊँगा।
3. साफ-सफाई (स्वच्छता) स्वस्थ, सुखी और अनुशासित जीवन का आधार है जो न केवल शारीरिक बीमारियों को दूर रखती है बल्कि मानसिक शांति और सकारात्मक ऊर्जा भी प्रदान करती है। यह व्यक्तिगत और सामाजिक विकास के लिए आवश्यक है जिससे बीमारियाँ कम होती हैं, पैसे की बचत होती है और एक सभ्य व्यवस्थित वातावरण का निर्माण होता है।

- **भाषा आधारित**

1. **(क) सीवेज–** नगरपालिका ने शहर के सीवेज (गंदे पानी) को सीधे नदी में बहाने पर रोक लगा दी है।

   (ख) फिल्टर– पानी पीने से पहले उसे फिल्टर करना चाहिए।

   (ग) ऑक्सीजन– पेड़-पौधे हमें जीवनरक्षक ऑक्सीजन प्रदान करते हैं।

   (घ) रेडियो– पुराने समय में मनोरंजन का साधन रेडियो ही होता था।

   (ङ) कैंसर– धूम्रपान की लत के कारण उसे फेफड़ों का कैंसर हो गया।

2. **समानार्थी शब्द**

   सूर्य – रवि, सूरज, प्रभाकर, भानु

   मित्र – सखा, दोस्त, संगी, सहचर

   सुंदर – खूबसूरत, हसीन, आकर्षक, मनोहर

   पानी – जल, नीर, जीवन, आब

   दुख – कष्ट, पीड़ा, व्यथा, वेदना

   ध्वनि – आवाज, नाद, स्वर, निर्घोष

3.

प्रत्यय	**शब्द**
ता	मित्रता, मानवता
आवट	सजावट, थकावट
औनी	सलौनी, घिनौनी
अनीय	पठनीय, आदरणीय

4. **क्रिया विशेषण**

   (क) कल, (ख) बाहर, (ग) धीरे-धीरे, (घ) बहुत।

- **कल्पना आधारित**

1. विकसित देशों में तकनीक के बावजूद पर्यावरण प्रदूषण (जैसे- उच्च कार्बन उत्सर्जन, ई-कचरा) प्रमुख समस्या है क्योंकि वहाँ की जीवन शैली अत्यधिक उपभोगवादी है। औद्योगिक उत्पादन और ऊर्जा की माँग बहुत अधिक है और ऐतिहासिक रूप से हुआ औद्योगीकरण लंबे समय से प्रदूषण बढ़ा रहा है। तकनीकी विकास अक्सर प्रदूषण को कम करने के बजाय उत्पादन बढ़ाने में लग जाता है।

   तकनीकी रूप से आगे होने के बावजूद उन देशों में आर्थिक वृद्धि और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के बीच संतुलन बनाना अभी भी एक बड़ी चुनौती है।
2. स्वच्छ, हरित एवं स्वच्छ वायुमंडल में जीवन की कल्पना एक आदर्श शांत और स्वस्थ दुनिया की कल्पना है, जहाँ मनुष्य और प्रकृति एक-दूसरे के पूरक बनकर रहते हैं। ऐसे माहौल में साँस लेना ही अपने आप में एक सुखद अनुभव होगा।

- **खेल आधारित**

छात्र स्वयं हल करें।

जाँच प्रश्न-पत्र-1

1. प्रश्नों के उत्तर

(क) हवा बादलों की साँस, चंद्रमा के पास और पेड़ों की डालियों से खेलती है।

(ख) मनोहर राजस्थान डूँगरपुर का रहने वाला था।

(ग) दीना ने कोलों को बताया कि उसके यहाँ जमीन की बहुत कमी है और वह बहुत महँगी है, जबकि वहाँ जमीन बहुत अधिक और उपजाऊ है।

(घ) हमें अपने साधन को तुच्छ या कम नहीं समझना चाहिए और न ही उनका दुरुपयोग करना चाहिए।

(ङ) हमें अपना बहुमूल्य समय कभी व्यर्थ नहीं गँवाना चाहिए।

2. गद्यांश से पूछे गए प्रश्नों के उत्तर
   1. कर्मचारी लेखिका के आते ही उन्हें कोई दुखद समाचार नहीं देना चाहते थे।
   2. माली की भावुकता ने बिना बोले ही वह सब कष्टकारी सच कह दिया जिसे अन्य लोग छिपाने की कोशिश कर रहे थे। (अर्थात् सोना की मृत्यु का संकेत दे दिया)।
   3. छात्रावास में पसरे सन्नाटे और लेखिका की अनुपस्थिति (अभाव) के कारण सोना व्याकुल हो गयी थी।
   4. एक दिन छलांग लगाते समय सोना रस्सी की सीमा भूल गई और बहुत ऊँचाई तक उछल गई। रस्सी खिंचने के कारण वह मुँह के बल धरती पर आ गिरी, जो उसकी अंतिम उछाल साबित हुई।
3. **सही विकल्प**–1. (घ), 2. (क), 3. (ग), 4. (क), 5. (क)।
4. **पंक्तियों की रिक्त पूर्ति**
   (क) बल, (ख) झुककर, (ग) जीवित शावक, (घ) सूरज छिपने, (ङ) संकट।
5. **विलोम शब्द**
   कोयल = कौआ, चातकी = चातक, शिखीन (मोर) = मोरनी, आकाश = पाताल, चन्द्र = सूर्य।
6. **एक शब्द**–

(क) भारतीय,
(ख) अकथनीय,
(ग) सुनहरा,
(घ) ग्रीष्मावकाश,
(ङ) सहपाठी।

7. **क्रिया शब्द**–

(क) नाप ली,
(ख) प्रशस्त करता है,
(ग) दौड़कर, आई,
(घ) बना रहा था,
(ङ) आती है।

8. **पर्यायवाची**–

(क) हवा = वायु, पवन,
(ख) मोर = मयूर, नीलकंठ,
(ग) नदी = सरिता, तटिनी
(घ) मनुष्य = मानव, आदमी।

जाँच प्रश्न-पत्र-2

1. प्रश्नों के उत्तर

(क) लाला सदानंद ने पंडित शादीराम के घर की अलमारी में कई पुरानी और सुंदर पत्रिकाओं का संग्रह देखा।

(ख) किसी क्षेत्र विशेष के लोगों के रहन-सहन, खान-पान, रीति-रिवाजों और कला साहित्य के मेल को लोक संस्कृति कहा जाता है।

(ग) स्वस्थ आहार, नियमित व्यायाम, सकारात्मक सोच और अच्छी नींद जीवन को सुंदर और स्वस्थ बनाने के मुख्य साधन हैं।

(घ) बलकरन ने अपनी निडरता और बहादुरी से तैमूर को प्रभावित किया था, जिससे वह बालक की हिम्मत देख दंग रह गया।

(ङ) दूसरों के लिए काँटा बोने वाले के लिए स्वयं के द्वारा बोए गए फूल भी भविष्य में सुखद परिणाम लेकर आते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि परोपकार का फल हमेशा अच्छा होता है।

2. **संदर्भ**–यह पद्यांश सुप्रसिद्ध कवि सोहनलाल द्विवेदी द्वारा रचित कविता 'हार नहीं होती' से उद्धृत है।

   प्रसंग–इन पंक्तियों के माध्यम से कवि ने मनुष्य के असफलता से न घबराने और निरंतर प्रयास करते रहने का संदेश दिया है। कवि का मानना है कि दृढ़ निश्चय और परिश्रम से ही सफलता प्राप्त की जा सकती है।

   व्याख्या–कवि कहते हैं कि यदि आप किसी कार्य में असफल हो जाते हैं, तो उसे हार न मानकर एक चुनौती की तरह स्वीकार करना चाहिए। हमें यह देखना चाहिए कि हमारे प्रयासों में कहाँ कमी रह गई और फिर सुधार कर दोबारा प्रयास करना चाहिए। कवि कहता है कि सफलता पाने के लिए कठिन परिश्रम और सुख-चैन का त्याग करना अनिवार्य है। जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए, तब तक हमें आलस्य को छोड़कर अपने काम में जुटे रहना चाहिए।

   कवि ने अंत में कहा है कि संसार में केवल उन्हीं लोगों का सम्मान और जय-जयकार होती है जो कर्म करते हैं। अंततः एक बार फिर कवि आत्मविश्वास जगाते हुए कहते हैं कि जो व्यक्ति बार-बार कोशिश करता है, वह कभी असफल नहीं होता; उसकी जीत निश्चित होती है।

3. **विकल्प के सही उत्तर**– 1. (ख), 2. (घ), 3. (ख), 4. (ख), 5. (घ)।

4. **सत्य-असत्य**

   1. (5), 2. (5), 3. (3), 4. (3), 5. (3)।

5. **सोच-समझकर**–

   1. यदि मुझे डाकिया का कार्य सौंपा जाए, तो मैं अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन पूरी ईमानदारी और निष्ठा के साथ करूँगा। सबसे पहले, समय की पाबंदी का विशेष ध्यान रखूँगा ताकि लोगों को उनकी चिटि्ठयाँ, मनीऑर्डर और महत्वपूर्ण दस्तावेज बिना किसी देरी के मिल सकें। मैं प्रत्येक पत्र और पार्सल को सुरक्षित रखने की पूरी कोशिश करूँगा ताकि वे खराब न हों मेरी कोशिश रहेगी कि कठिन रास्तों और दूर-दराज के इलाकों में भी मुस्कुराते हुए अपनी सेवा दूँ। मैं लोगों के साथ विनम्र व्यवहार करूँगा और उनके भरोसे को बनाए रखूँगा, क्योंकि एक डाकिया समाज में सिर्फ कागज टुकड़े नहीं, बल्कि अपनों की खुशियाँ और जरूरी संदेश पहुँचाने का माध्यम होता है।

   2. यदि ग्रामीण कल्याणी (बलकरन की माँ) को तलघर में न ले जाता, तो शायद तैमूर के क्रूर सैनिकों द्वारा उनकी हत्या कर दी जाती या वे बंदी बना ली जातीं। इसस एकांकी का अंत बेहद दुखद हो सकता था और बलकरन अपनी माँ को खोने के बाद शायद उस वीरता और देशप्रेम का परिचय न दे पाता, जिसके लिए वह एकांकी में जाना जाता है।

      अतः ग्रामीण की सूझबूझ (कल्याणी को तलघर में छिपाना) न केवल कल्याणी के जीवन की रक्षा के लिए महत्वपूर्ण थी, बल्कि उसने बलकरन को एक वीर बालक के रूप में उभरने का अवसर भी दिया, जिससे एकांकी का उद्देश्य सार्थक हो सका।

6.

विग्रह पद	**समास का नाम**
माता-पिता = माता और पिता,	द्वंद्व समास
पाप-पुण्य = पाप और पुण्य,	द्वंद्व समास
दाल-रोटी = दाल और रोटी,	द्वंद्व समास
अन्न-जल = अन्न और जल,	द्वंद्व समास
राम-लखन = राम और लखन,	द्वंद्व समास

7. **उपसर्ग जोड़कर नए शब्द**–अपमान, पराजय, निरंजन, अत्याचार, अधपका।

8. **विच्छेदों की संधि**–पवित्र, शयन, चयन, नाविक।

9.

प्रत्यय	**नया शब्द**
वाला	अखबार वाला
ई	आदमी
ड़ी	खिलाड़ी
इक	साप्ताहिक
इयल	सड़ियल।

OO